चौथी पुस्तक

पाठ १

प्रार्थना और उपदेश

(१)

कब से तुम्हारी राह दिन रात देखता हूँ,
दया-घन, दया कर दया दिखलाओ तुम।
यह तो बताओ तुम छिपे किस लोक में हो,
आओ शीघ्र मुझे मत और तरसाओ तुम॥
राधा के सहित करो मेरे उर में निवास
और सब मेरी भव-बाधा को मिटाओ तुम।
जाऊँ मैं कहाँ गोपाल कृष्ण तुम्हारा छोड़
नाम के हीन ने अब मुझे अपनाओ तुम।

२

न्याय, दया, सत्य प्रेम को है अपनाओ तुम
चाहे तुम्हें जग में कहाना [illegible] नर है
करो भलाई कर सुयश कमाओ सब
मर कर भी जो तुम्हें बनना अमर है।

मत करवाओ कभी उससे कठोर काम
सोचो जरा कितना तुम्हारा मृदु कर है।
आने दो न उर में कदापि मद मत्सर को
क्या न जानते हो यह ईश्वर का घर है॥

कठिन शब्द—

दया-धन, भव-बाधा, दिव्य, मृदु, मत्सर, उर।

प्रश्न—

(१) तरसाओ क्रिया किस शब्द से बनी है ?
(२) प्रथम पद्य की अन्तिम दो पंक्तियों में क्या भाव है ?
(३) अमर बनना और राह देखना का क्या अर्थ है ?

पाठ २

महाराज पञ्चम जार्ज और महारानी मेरी

तुम यह जानते हो कि आजकल भारतवर्ष में अंगरेज़ों का राज्य है और पञ्चम जार्ज हम लोगों के महाराज हैं और मेरी महारानी हैं। आज हम [illegible]
[illegible]

महाराज पञ्चम जार्ज स्वर्गीय महाराज सप्तम एडवर्ड के पुत्र हैं। परन्तु वे उनके ज्येष्ठ पुत्र नहीं हैं। इसी से इन्हें अपने बाल्यकाल में युवराज के समान ठाटबाट से जीवन व्यतीत नहीं करना पड़ा। अंगरेजी भाषा और धर्म की शिक्षा पा लेने के बाद वे जहाज पर काम सीखने के लिये गए। उस समय उनकी अवस्था केवल तेरह वर्ष की थी। जहाज पर वे एक साधारण मल्लाह की भांति रहते और काम करते थे। नाविक विद्या सीखने के लिये इन्हें बड़ा परिश्रम करना पड़ता था। यही कारण है कि महाराज पञ्चम जार्ज को मल्लाहों और मजदूरों के प्रति बड़ी सहानुभूति है। सन १९०१ में अपने ज्येष्ठ भ्राता की मृत्यु हो जाने पर वे युवराज हुए। इंग्लैंड में युवराज प्रिन्स आव् वेल्स कहा जाता है। पिता की मृत्यु हो जाने पर सन १९१० में वे लन्दन में राजगद्दी पर बैठे।

[illegible] अंगरेजों का राज्य स्थापित [illegible] राजाओं [illegible] सन [illegible] महाराज [illegible]

उन्होंने यह कहा कि हमारे राज्य में सारी प्रजा एक समान समझी जायगी। किसी के भी धर्म में हस्तक्षेप न किया जायगा और जाति, देश तथा वर्ण का विचार न कर योग्य व्यक्तियों को उच्च पद दिए जायेंगे। उनके शासन-काल में भारतवर्ष में कितने ही सुधार किए गए और यहाँ शिक्षा, उद्यम और व्यवसाय की विशेष वृद्धि हुई। उनके पश्चात सन १९०१ ई० में महाराज सप्तम एडवर्ड भारत के सम्राट हुए। उनके समय में भी भारतवर्ष उन्नति के पथ पर अग्रसर हुआ। पर महाराज पञ्चम जार्ज के सिंहासन पर बैठते ही मानो भारत का भाग्योदय हो गया। सन १९११ में महाराज पञ्चम जार्ज महारानी मेरी के साथ भारत में पधारे और दिल्ली में राजसिंहासन पर बैठे। भारत के लिये यह पहला ही अवसर था कि इंगलैंड का राजा स्वयं आकर भारत के सिंहासन पर बैठे। तभी से दिल्ली भारत की राजधानी है। महाराज ने भारतीय प्रजा के हित के लिये कितनी ही बातें अपनी घोषणा में कहीं। तब से बराबर भारत के शासन में सुधार हो रहा है।

महारानी मेरी को भी प्रजा के हित का ध्यान बना रहता है। उनका बड़ा ही सरल स्वभाव है। गर्व उन्हें छू भी नहीं गया। शत्रुओं के प्रति भी उनका

अनुराग स्वाभाविक ही है, पर अपनी प्रजा के प्रति भी उनका व्यवहार सदैव प्रेम-पूर्ण रहता है। महाराज पञ्चम जार्ज और महारानी मेरी का गार्हस्थ्य जीवन बड़ा ही सुखमय है। भगवान उन्हें दीर्घायु करें।

कठिन शब्द—

नाविक विद्या, सहानुभूति, घोषणा, हस्तक्षेप,
उद्यम और व्यवसाय, अनुराग, भाग्योदय,
गार्हस्थ्य जीवन, दीर्घायु।

प्रश्न—

(१) आज-कल प्रिंस आव् वेल्स कौन है ?
(२) महारानी विक्टोरिया की घोषणा क्या थी ?

—

पाठ ३

एक घिसे पैसे की कहानी

मेरा नाम पैसा है। पहले मैं ताँबे की खान में रहता था। वहाँ मैं सुख से रहता था इसका मुझे कुछ भी पता नहीं। वहाँ मेरे चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार था संसार में कहाँ क्या हो रहा है, इसका मुझे कुछ भी

खबर न थी। मैं बहुत चाहता था कि बाहर चलूँ और देखूँ कि संसार में क्या हो रहा है। पर खेद की बात है कि मैं बाहर निकलने में असमर्थ था। वहाँ मेरा ऐसा रूप न था जैसा आप अब देख रहे हैं। वहाँ मैं ताँबे के ढेर में गड़ा पड़ा था। वहाँ पड़े-पड़े मेरा जी जैसा घबड़ा रहा था उसे मैं ही जानता हूँ।

परमात्मा की लीला बड़ी विचित्र है। किसी के दिन सदा एक से नहीं रहते। दुःख के बाद सुख और सुख के बाद दुःख, यह बराबर होता ही रहता है। इसीलिये मेरी भी दशा बदली। अब वह कथा सुनिए, जिस तरह मुझे नया रूप मिला।

एक दिन एक मजदूर ने उस अँधेरे घर से मुझे खोद निकाला। वहाँ से मैं गाड़ी में लदकर कलकत्ते की टकसाल में गया।

कलकत्ते के कारीगरों ने मुझे आग में गलाया और साँचे में ढाल कर गोल बनाया। भट्टी में तपाने से मेरा रङ्ग सोने की भाँति चमकने लगा। सैकड़ों-हजारों वर्षों का जमा हुआ मेरा मैल आग ने नष्ट कर डाला।

फिर मेरे एक तरफ मेरा नाम और मेरा जन्म-संवत् और [illegible] महाराज [illegible] का नाम और चित्र

छाप दिया गया। इतना सब हो जाने पर मुझे बाहर निकलने का अवसर मिला।

मैं अकेला नहीं हूँ, मेरे बहुत से भाई हैं। हम सब देखने में एक से हैं। हम सब द्विज हैं। हमारा भी जन्म दो बार होता है। पहला जन्म हमारा खान में होता है और दूसरा टकसाल में। इसलिये हमारी गणना भी द्विजों में होनी चाहिए।

अच्छा, अब आगे का हाल सुनिए। एक दिन एक बनिया हम सबको एक थैली में भर कर अपने घर ले गया। तभी से मैं बराबर हाथों-हाथ घूम रहा हूँ। लाखों आदमियों के हाथों पर मैं घूम आया हूँ। मैं बड़े-बड़े पदवालों [illegible] तक के हाथों में हो आया हूँ। यहाँ तक कि कई बार राजमहलों में भी मैं बेखटके चला गया। मुझे वहाँ किसी पहरेदार ने नहीं रोका। मैं लोगों को बड़ा प्यारा हूँ। मुझे लोग बड़ी सावधानी से रखते हैं। कोई डिब्बी में रखता है तो कोई सन्दूक में रखता है। कोई-कोई तो मुझे जमीन में भी गाड़ देते हैं।

[illegible]

या तो मुझे जो पाते हैं वे ही प्रसन्न हो जाते हैं पर वह लँगड़ा साधु मुझे पाकर अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसकी प्रसन्नता देखकर मैंने चाहा कि अब मैं इसी साधु के पास रहूँ। पर वह भी मुझे न रख सका। रख कहाँ से सकता? बेचारा मारे भूख के तड़प रहा था। दो दिन से उसे एक टुकड़ा भी न मिला था। उसने मुझे एक दूकानदार को देकर भुने हुए चने ले लिए और उन्हें खाकर उसने अपने प्राण बचाए। दूकानदार ने एक छेद से मुझे एक बक्स में डाल दिया। बक्स में जाने पर मुझे वहाँ मेरे बहुत से भाई मिले। मैं, अपने भाइयों के पास थोड़ी देर भी न बैठने पाया था कि बनिये के लड़के ने मुझे एक हलवाई की दूकान पर जा फेंका और मेरे बदले में मिठाई लेकर खा गया। मैं इसी प्रकार, कितनी ही दूकानों, कितने ही राजमहलों और कितनी ही छोटी-छोटी झोपड़ियों में घूमता रहा हूँ। मैं अपने घूमने की सारी कहानी कहने लगूँ तो महाभारत का दूसरा पोथा तैयार हो जाय।

घूमते-घूमते मेरा सारा शरीर घिस गया। मैं अपने बुढ़ापे में कलकत्ते की टकसाल में हूँ। अब मैं वहाँ से बाहर नहीं जा सकता। मैं फिर से गला कर ढाला

अहा ! पानी पर चलती नाव।
देख लो, दिखलाती है चाव॥
हृदय में भरती है आनंद।
हमें तो है यह अधिक पसंद॥
हमें यह सुख पहुँचाती है।
हमारा जी बहलाती है॥

गगन में घिरते जब घन घोर।
बरसता है पानी अति जोर॥
ताल नद हो जाते हैं पूर।
फैलता पानी अति ही दूर॥
नाव हम जिधर घुमाते हैं।
उधर बस पानी पाते हैं॥

निरखने नव बरसात-बहार।
नाव पर हो हम लोग सवार॥
जहाँ तक लोग न सकते तैर।
वहाँ तक करते हैं हम सैर॥
घूमने का सुख पाते हैं।
गीत वर्षा के गाते हैं।

रेल में लेते तनिक न काम।
नहीं मोटर का लेते नाम॥
चाहते नहीं हवाई-यान।
नाव पर ही बस तम्बू तान॥
घूमने को हम जाते हैं।
घूमकर वापस आते हैं॥

नाव गहरे जल पर जिस काल।
चंपल चलती है डगमग चाल॥
अहा! करती तब, खूब कमाल।
देखते ही बनता है हाल॥
कभी वह दौड़ लगाती है।
अजी मोटर बन जाती है॥

चलाते माँझी डाँड़ सुधार।
एक ही साथ, अनेकों बार॥
डाँड़ दिखने ज्यों पंख पसार।
वही जाती चिड़िया जलधार॥
नाव चिड़िया बन जाती है
और उड़ती-सी जाती है॥

रेल का इञ्जिन, मोटरकार।
जहाँ सब रहते हैं वेकार॥
न हाथी, घोड़े देते काम।
वहाँ 'पर नाव कमाती नाम॥
अनोखा काम दिखाती है।
बड़प्पन भारी पाती है॥

नाव पर होकर लोग सवार।
बड़ी नदियों को होते पार॥
मनों रख अपने ऊपर भार।
नाव देती उस पार उतार॥
खेल का खेल खिलाती है।
काम का काम बनाती है॥

देखिए, जरा समय का फेर।
नाव पर होता जो अंधेर!
नाव थी जिस गाड़ी पर रही।
नाव पर गाड़ी है अब वही॥
समय जब पलटा खाता है।
काम उलटा हो जाता है॥

कठिन शब्द—

ढंग, दाव, गगन, निरखते, यान, अनोखा, चपल, कमाल, माँझी।

प्रश्न—

(१) पल्टा खाना, नाम कमाना, दाव दिखलाना और ढंगसे बनना से क्या अभिप्राय समझते हो?

(२) "खेल का खेल" और "काम का काम" का क्या अर्थ है?

पाठ ४

पशु-पक्षियों का आपसी मेल

यह तो सभी जानते हैं कि हमारी भाँति पशु-पक्षी भी खाते-पीते, सोते-जागते और मरते-जीते हैं। परन्तु बहुत से लोग यह नहीं जानते कि पशु-पक्षी भी आपस में मेल रखते हैं। हम तुम्हें पशु पक्षियों की सच्ची कहानियाँ सुनाते हैं।

लोग बहुधा कुत्ते पालते हैं। कुत्ता अपने स्वामी को बहुत चाहता है, यह तो सभी जानते हैं। परन्तु कुत्ता दूसरे पशु-पक्षियों से भी मेल रख सकता है, यह कम लोग जानते हैं।

एक मनुष्य को पशु-पक्षी पालने का बड़ा शौक था। उसने यह देखने के लिये कि पशु-पक्षी परस्पर कैसा व्यवहार करते हैं, अनेक पशु-पक्षी पाले। उस मनुष्य ने जब इन सबको एक ही स्थान में रक्खा तब पहले उन्हें बहुत बुरा मालूम हुआ। कभी कभी वे परस्पर लड़ने लगते थे परन्तु धीरे धीरे उनमें मेल होने लगा और वे पड़ोसियों की भाँति रहने लगे। यही नहीं, कुछ दिनों में उनमें ऐसा मेल हो गया जैसा कि एक ही परिवार के लोगों में होता है।

कभी कभी मुर्गी कुत्ते की पीठ पर बैठ जाती थी और कुत्ता बुरा न मानता था। बिल्ली और तोते का बैर प्रसिद्ध है, परन्तु यहाँ तोता और बिल्ली भी हिलमिल कर रहने लगे। ये सब पशु-पक्षी ऐसे हिल-मिल गए कि एक दूसरे के बिना उन्हें चैन नहीं पड़ता था।

अब दूसरी कहानी सुनो। एक घर में कई बच्चे थे। उन्होंने एक बिल्ली पाल रक्खी थी। कुछ दिनों के उपरान्त उन बच्चों के लिये उनके माँ-बाप ने कहीं से कुछ खरगोश के बच्चे भी मगाए। ये बच्चे इतने छोटे थे कि अभी अपने आप दूध भी न पी सकते थे। कपड़े के टुकड़े को दूध में भिगोकर और मुंह में निचोड़कर उन्हें दूध पिलाया जाता था। दिन भर तो लड़के इन बच्चों को लेकर मग

खेलते रहे। जब संध्या हुई तब यह चिन्ता हुई कि रात में खरगोश के बच्चों को कहाँ सुलाया जाय। डर यह था कि कहीं ऐसा न हो कि बिल्ली उन पर टूट पड़े और उन्हें मार डाले। इस बात की जाँच करने के लिये उन लोगों ने बच्चों को बिल्ली के आगे डाल दिया। बिल्ली उन्हें देखकर न गुर्राई और न झपटी। यही नहीं, वह अपनी जीभ से उन्हें चाटचाट कर अपना स्नेह प्रकट करने लगी। तब से वे बच्चे बिल्ली ही के साथ रहने लगे। वे रात को उसी के पास सोते थे। बिल्ली स्नेहपूर्वक उनकी देखभाल करती थी। जब बच्चे बड़े हो गए तब वे कभी कभी छेड़-छाड़ कर बिल्ली को तंग भी किया करते थे। परन्तु इससे बिल्ली बुरा न मानती थी।

जिन लोगों के यहाँ गाय और कुत्ता दोनों पले रहते हैं उन्होंने अवश्य उनको स्नेहपूर्वक खेलते देखा होगा। कभी कभी वे झूठी लड़ाई भी करने लगते हैं। परन्तु यह लड़ाई प्यार की होती है। वे एक दूसरे को चोट नहीं पहुँचाते।

घोड़े अपने स्वामी से बहुत प्यार रखते हैं। युद्ध में सवारों को घोड़ों से बड़ी सहायता मिलती है। कई बार ऐसा हुआ है कि घोड़े ने अपने प्राण देकर अपने स्वामी के प्राण बचाए हैं। चारों और न [illegible]

रहती है तो भी घोड़ा अपने स्वामी के पास खड़ा रहता है।

सिंह बड़ा भयानक पशु है। उसके हृदय में दया नहीं होती। परन्तु वह भी मनुष्यों से हिल मिल जाता है। एक सरकस करनेवाली कम्पनी के पास कई सिंह थे। एक रात को खेल हो रहा था। जब घोड़ों के तरह-तरह के चमत्कार दिखाए जा चुके तब सिंह की बारी आई। एक पहलवान ने सिंह से कुश्ती लड़ी। पहलवान ने सिंह के मुंह में हाथ डाल दिया। वह कुछ न बोला। ऐसा प्रतीत होता था मानो वह एक पालतू कुत्ता है। फिर एक बकरा भी सिंह के साथ खेलता रहा। कभी कभी वह उसके ऊपर चढ़ जाता था और कभी नीचे से होकर निकल जाता था। मतलब बात यह है कि क्या मनुष्य और क्या पशु-पक्षी सभी में प्रेम का भाव दिया हुआ है।

कठिन शब्द—

स्नेहपूर्वक, भयानक, चमत्कार, प्रतीत, भाव।

प्रश्न

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]

पाठ ६

राजिम

सिहावा के पहाड़ों से निकल कर महानदी धमतरी के समीप में बहती हुई राजिम पहुँचती है। धमतरी के समीप खेत सींचने के लिये नहरें बनाई गई हैं जिनमें महानदी का जल लिया जाता है। राजिम में राजीवलोचन का मन्दिर है। राजिम के समीप पैरी तथा महानदी नदियों का सङ्गम हुआ है। सङ्गम के पास रेत में एक बड़े टीले पर कुलेश्वर महादेव का मन्दिर है जिसके ऊपर एक छतनार पीपल का वृक्ष है। कभी कभी मन्दिर का चबूतरा नदी की जलधारा में डूब जाता है।

पहले जब रेल न थी तब उत्तरी भारत के लोग राजिम होकर अथवा रत्नपुर से शवरीनारायण होकर जगन्नाथजी की यात्रा को जाते थे। कोई कोई सम्बलपुर पहुँच कर महानदी में नौका द्वारा यात्रा करते, और जगन्नाथजी पहुँचते थे। वर्षा में राजिम या शवरीनारायण से नौका द्वारा जाना भी संभव है क्योंकि उस समय नदी में जल पर्याप्त रहता है। जगन्नाथजी के यात्रियों का विश्रामस्थान होने के कारण राजिम, शवरीनारायण, आदि स्थान तीर्थ माने जाने लगे। वहाँ मन्दिर, घाट, अब

शालाएँ आदि बन गईं तथा संस्कृत-पाठशालाएँ भी खुल गईं। शिवरात्रि के अवसर पर कुलेश्वर महादेव के दर्शन के लिये बड़ी भीड़ होती है, वही भीड़ राजीवलोचन भगवान के दर्शनों को आती है। वही समय राजिम के मेले का है।

भगवान राजीवलोचन का मंदिर एक ऊँचे चबूतरे पर एक बड़े घेरे के भीतर बना है। बारहो खंभे के काले पत्थर पर एक शिलालेख है। इस मंदिर के पुजारी ब्राह्मण नहीं हैं। आस-पास और भी कई एक मंदिर हैं और कुछ मंदिरों के खँडहर हैं जिससे अनुमान होता है कि राजिम प्राचीन काल से हिन्दुओं का तीर्थस्थान है।

शिवरात्रि से आरम्भ होकर एक मास तक यहाँ मेला लगता है। एक महीना खूब चहल पहल रहती है। मेले के बाजार में यात्रियों की आवश्यकताओं की विविध वस्तुएँ मिलती हैं। कई व्यापारियों की वार्षिक आमदनी का समय-यह मेला ही है। मेले में खिलौने तथा विनोद के पदार्थ खूब बिकते हैं। व्यापारियों से जो बाजार-कर लिया जाता है वह मेले के प्रबंध में व्यय होता है। बङ्गाल नागपुर रेलवे की एक छोटी शाखा रायपुर से अभनपुर होती हुई राजिम के सामने की बस्ती, नवापारा तक आती है। इसी लाइन की एक दूसरी शाखा अभनपुर से धमतरी चली जाती है।

प्रायः देखा जाता है कि प्राचीन प्रसिद्ध स्थानों में बड़े बड़े इमली के वृक्ष बहुतायत से पाये जाते हैं। युक्तप्रदेश में अयोध्या और मध्यप्रदेश में चम्पा तथा रत्नपुर इसके प्रमाण हो सकते हैं। राजिम में भी इमली के वृक्ष बहुत थे। परन्तु वे कोयला बनाने के लिए काट डाले गए हैं। फिर भी बहुतेरे वृक्ष खड़े हैं। उन्हें देखकर इस स्थान की प्राचीनता का अनुभव होता है।

संस्कृत पाठशाला के अतिरिक्त यहाँ एक अच्छे शालाभवन में एक वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल भी लगता है।

राजिम से ५ मील की दूरी पर महानदी के तट पर चम्पारण्य नामक एक पवित्र स्थान है, वहाँ पर कभी किसी जैन साधु ने निवास किया था। अब भी जैन बहुधा उस स्थान के दर्शनों की अभिलाषा से वहाँ जाते और ठहरते हैं।

कठिन शब्द—

सम्भव पर्याप्त शिलालेख अनुमान, राजीवलोचन अनुभव अभिलाषा।

प्रश्न—

१। [illegible]

[illegible]

[illegible]

पाठ ७

आनन्द का स्वरूप

भीख माँगकर नित खाते हैं,
चिथड़े भी पा जाते हैं।
जोड़-जाड़कर जिन्हें ओढ़ ये,
अपना समय बिताते हैं॥

कहाँ रात को सोना होगा,
खटका रहता है दिन-रात।
गर्मी जाड़ा सभी समय में,
हो चाहे अविरल बरसात॥

सुख का कुछ भी नाम नहीं है,
तो भी देखो है यह हाल।
खड़े यहाँ ये यों हँसते हैं,
मानो हाथ लगा हो माल॥

किन्तु नहीं, यह बात नहीं है,
हुआ इन्हें है प्रभु का ध्यान।
इसालिये दुख भूल गया है,
उनकी करुणा मन में जान॥

कठिन शब्द—

अविरल, माल, करुणा।

प्रश्न—

(१) असली आनन्द क्या है?
(२) धनी से अधिक साधु क्यों प्रसन्न रहता है?

पाठ ८

ध्रुव-चरित्र

ऐसा कौन पढ़ा-लिखा हिन्दू होगा जो मनु मह[illegible]
के नाम से परिचित न हो। ये बड़े धर्मात्मा राजा
गए हैं। इन्हीं के पुत्र उत्तानपाद के यहाँ ध्रुव ने
लिया। ध्रुव की माता का नाम सुनीति था। इ
एक सौतेली माता भी थीं, जिनका नाम सुरुचि
उत्तम इसी सौतेली माँ का बेटा था। उत्तानपाद सु
और ध्रुव से कम तथा सुरुचि और उत्तम को अ
प्यार करते थे

एक दिन राजा उत्तानपाद अपने दूसरे बेटे
को गोदी में लिए बैठे थे। संयोग ही उत्तम

माता सुरुचि भी बैठी थीं। ध्रुव खेलते-खेलते राजा
पास पहुँचकर गोदी में बैठने का हठ करने लगे। सुरु
से यह न देखा गया। उसने ध्रुव से कहा—बच्चा
तुम्हारा जन्म दूसरी माता से हुआ है, अतः तुम इन
गोदी में नहीं बैठ सकते। यह गोदी केवल मेरे ही
के लिये है।

क्षत्रिय-बालक ध्रुव यह वचन न सह सका। उस
कोमल हृदय में बड़ी चोट लगी। वह रोता हुआ अप
माता के पास गया। सुनीति ने उसको पुचकार
उसके रोने का कारण पूछा। ध्रुव ने सारी बातें
सुनाईं। अपने बच्चे के प्रति सौत का यह कठोर व्यव
देखकर सुनीति बड़ी उदास हुई। उसने दुःख के स
ध्रुव से कहा—हे पुत्र, यह सत्य है कि तुम अपने पि
के प्यारे नहीं हो। जान पड़ता है कि हम लोगों ने
जन्म में कोई बड़ा पाप किया है, जिसका फल अब
लोगों को भोगना पड़ रहा है। अस्तु, तुम्हें सन्तोष कर
चाहिए; जो प्रारब्ध में होता है वही मिलता है। य
तुमको इन बातों से दुःख हुआ है तो पुण्य करो, धर्मा
बनो, और सबके मित्र बनकर रहो। यदि तुम ऐ
करोगे तो संसार की सारी सम्पत्तियाँ तुम्हारे पीछे-प
फिरने लगेंगी।

यह सुनकर ध्रुवजी ने कहा—हे माता, सुरुचि के
वचनों ने मेरे हृदय पर ऐसी चोट पहुँचाई है कि तुम्हारी
ल उसमें नहीं ठहरती। अब तो मेरे जी में यही है कि
ई अन्य कार्य करके मैं ऐसा पद प्राप्त करूं जो आज
क किसी को न मिला हो। मेरे भाई उत्तम पिताजी का
दिया हुआ राज्य भोगें। मुझे दूसरे की दी हुई वस्तु लेना
सन्द भी नहीं। मैं ऐसी वस्तु लूंगा जो आज तक मेरे
ूज्य पिताजी को भी प्राप्त नहीं हुई।

यह कहकर ध्रुवजी घर से निकल पड़े। किसी
अरण्य में कुछ ऋषिगण ठहरे हुए थे। उनसे ध्रुवजी ने
अपनी सब व्यथा कही और उनसे सहायता माँगी।
मरीचि नामक ऋषि ने उनसे कहा—हे राजकुमार! जो
लोग अविनाशी परमात्मा की आराधना नहीं करते उनको
ऊँचा स्थान नहीं मिलता। इसलिये, तुम अविनाशी
भगवान की आराधना करो। इसी तरह प्रत्येक ऋषि ने
उन्हें परमेश्वर की आराधना करने को ही कहा।
तदुपरान्त ध्रुवजी ने उनसे आराधना करने की रीति
बतलाने की प्रार्थना की। ऋषियों ने उन्हें इसका यथास्वरूप
[illegible]

सब बातें जानकर ध्रुवजी सबको प्रणाम कर वहां से
मधुवन की तरफ [illegible] वहां पहुँचकर, जिस तरह ऋषियों

ने बतलाया था उसी तरह, वे तपस्या करने लगें
उन्होंने अपनी इन्द्रियों और मन को रोक लिया ।
ईश्वर की आराधना में ऐसे लग गए कि उन्हें कुछ खब
ही न रही। वे समझने लगे कि हमारे हृदय में भगवा
हैं। वे उन्हीं का ध्यान करने लगे।

अच्छे काम में तो अनेक विघ्न हुआ ही करते हैं। ए
दिन कोई स्त्री सुनीति का रूप बनाकर ध्रुवजी के पा
आकर कहने लगी—प्यारे पुत्र, तुम्हारी आयु अभी त
करने योग्य नहीं है, अभी तो तुम्हारे खेलने-कूदने
ही समय है। इस कठिन तपस्या को त्याग दो
यदि तुम इस हठ को नहीं छोड़ोगे तो तुम
सामने ही मैं अपने शरीर का अन्त कर दूँगी
जब इस पर भी ध्रुवजी का ध्यान न हिगा
वह यह कहकर चली गई कि हे पुत्र, देख,
भयङ्कर राक्षस शस्त्र लिए हुए तेरे सामने खड़े है
यहाँ से भाग जा ।

सुनीति के चले जाने पर देवताओं के भेजे हुए अने
भयङ्कर राक्षस उनको तपस्या में नाना प्रकार से वि
डालने लगे। पर, ध्रुवजी पूर्ववत ध्यान में मग्न रहे।
राक्षसगण हारकर चले गए ।

यह देखकर देवता बहुत डरे। वे झट भगवान

पास जाकर प्रार्थना करने लगे कि हे भगवान, ध्रुव को शीघ्र ही प्रसन्न करना चाहिए, वह वहाँ घोर तपस्या कर रहा है। हे प्रभो! कृपया तुरन्त जाकर उसकी कामना पूरी कीजिए।

यह प्रार्थना करके देवता अपने-अपने निवास-स्थान को लौटकर चले गए। और भगवान ध्रुवजी के पास पहुँचकर बोले—प्यारे ध्रुव! तुम्हारी तपस्या, प्रेम और कठिन आराधना से हम प्रसन्न हुए हैं। अब तुम जो चाहो सो वर माँगो।

भगवान का वचन सुनते ही ध्रुवजी प्रेम से विह्वल हो गए। उन्होंने आँखें खोलीं। वे भगवान की स्तुति करना चाहते थे, पर करते कैसे? उन्होंने पढ़ा-लिखा तो था ही नहीं। झट उनके चरणों पर गिर पड़े और भगवान से कहने लगे कि यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो ऐसी कृपा कीजिए कि जिससे मैं आपकी स्तुति कर सकूँ। मैं चाहता हूँ कि आपकी महिमा गाऊँ, पर असमर्थ हूँ। यह सुनकर भगवान ने अपना शंख ध्रुवजी के मुँह से लगा दिया। इसके लगते ही ध्रुवजी बिना पढ़े ही सब विद्याओं में पारंगत हो गए और स्तुति करने लगे।

स्तुति के उपरान्त भगवान ने ध्रुव से वर माँगने को कहा, पर ध्रुवजी ने उत्तर दिया कि आपके प्रसन्न होने

से मेरा सब श्रम सफल हुआ। अब मुझे किसी व
की चाह नहीं रही। परन्तु भगवान ने वरदान
सम्बन्ध में आग्रह किया। तब ध्रुव ने कहा कि
अन्तर्यामी हैं। फिर भी, मैं कहता हूँ कि मेरी सौते
मा ने मेरा निरादर किया है, इसलिये आप मेरे लि
कोई ऐसा स्थान दीजिए जो आज तक किसी को
मिला हो।

भगवान ने कहा कि अच्छा, तुमने जो माँगा
मैंने दिया। तुम्हारी माता भी तुम्हारे पास ही ऊँचे लो
में तारा बनकर रहेगी।

ध्रुवजी की मनोकामना पूरी करके भगवान
गए। ध्रुवजी भी बहुत दिन तक सुख भोग कर
लोक को चले गए। उनकी माता भी उन्हीं के
सबसे ऊँचे लोक में गईं। आकाश के जिस तारे को
तारा कहते हैं वही ध्रुवजी का लोक है।

कठिन शब्द—

कोमल, पुचकार, अस्तु, प्रारब्ध, सम्पत्ति
अरण्य, व्यथा, अविनाशी, तदुपरान्त, आराध
पर्यपुरुष, विघ्न, पूर्ववत्, विह्वल, पारंगत, आग्र
अन्तर्यामी, निरादर, मनोकामना।

सारा दुःख मेरी सन्तान के कारण है। जिस माता की सन्तान का जीवन इतना कष्टकर हो वह सुख से कैसे रह सकती है ?

इन्द्र—भला बता तो सही, तेरी सन्तान को क्या कष्ट है ?

सुरभी—महाराज ! उसके कष्टों का ठिकाना है ! आप भी देखते होंगे कि किसान जिन बैलों के कठिन परिश्रम से इतना अन्न उत्पन्न करते हैं उन्हीं के साथ कैसा बुरा बर्ताव करते हैं। उन्हें हल में जोतते और उनसे दिन भर कठिन परिश्रम लेते हैं। उनमें से कई भूखों मरने के कारण निर्बल हो जाते हैं और खेतों के ढेलों पर पैर न जमने के कारण गिर गिर पड़ते हैं। तिस पर भी ये निष्ठुर किसान उनकी पूँछ मरोड़ मरोड़ और मार मार उन्हें पीड़ा पहुँचाते हैं। गाड़ीवान तथा बंजारे भी मेरे इन पुत्रों पर तनिक भी दया नहीं करते। इन्हीं के दुःख से मैं सदा दुःखित रहा करती हूँ और आपकी शरण में न्याय की प्रार्थना करने आई हूँ।

इन्द्र—तेरे पुत्रों में से कितने ऐसे दुःखी हैं ? क्या उनकी संख्या अधिक है ?

सुरभी—महाराज ! अधिक क्या, प्रायः सभी की यही दशा है। हे भगवन ! इन कष्टों को देखकर मुझे

रहिमन याचकता गहे, बड़े छोट है जात।
नारायण हूँ को भयो, बावन आँगुर गात ॥ ३ ॥
नाद रीझि तन देत मृग, नर-धन हेत समेत।
ते रहीम पशु ते अधिक, रीझेहु कछू न देत ॥ ४ ॥
जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो लगै, बढ़े अँधेरो होय ॥ ५ ॥
रहिमन अँसुआ नयन ढरि, जिय दुख प्रगट करेय।
जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कहि देय ॥ ६ ॥
जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाड़त छोह ॥ ७ ॥
दुरदिन परे रहीम कहि, दुरथल जैयत भागि।
ठाढ़े हूजत घूर पर, जब घर लागति आगि ॥ ८

कठिन शब्द—

बेलि, दीनबन्धु, याचकता, बावन, गात, नाद
बारे, बढ़े, मीन, घूर।

प्रश्न—

(१) नारायण बावन आँगुर कैसे हुए ?
(२) बारे और बढ़े इन दो शब्दों को समझाओ।
(३) 'तऊ न छाड़त नेह' का अर्थ समझाओ।

पाठ ११

पृथ्वी

पृथ्वी देखने में चपटी जान पड़ती है। परन्तु वह चपटी नहीं है, वह नारङ्गी के समान गोल है। उसके ऊपर और नीचे का भाग थोड़ा चपटा है।

पृथ्वी के गोल होने के कई प्रमाण हैं। पहला प्रमाण तो यह है कि जो मनुष्य पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने को निकलते हैं वे प्रदक्षिणा करके जहाँ से चलते हैं वहीं आ जाते हैं। यदि पृथ्वी गोल न होती तो मनुष्य कहीं से कहीं पहुँच जाते।

दूसरा प्रमाण ग्रहण का है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमते घूमते जब सूर्य और चन्द्रमा के मध्य में आ जाती है तब उसकी गोलाकार छाया चन्द्रमा पर पड़ती है। इस छाया को देखने से जान पड़ता है कि पृथ्वी गोल है

तीसरा प्रमाण यह है कि समुद्र में दूर से जब जहाज किनारे की ओर आते हैं तब एक साथ ही वे पूरे नहीं दिखलाई देते पहले उनका ऊपरी भाग दिखलाई देता है, फिर कुछ देर में उनके बीच का भाग दिखलाई देता है, और अन्त में उनके नीचे का भाग दिखलाई

देता है। यदि पृथ्वी गोल न होती, तो ऐसा न हो
दृष्टि पड़ते ही जहाज पूरा दिखलाई देने लगता।

पृथ्वी की गति दो प्रकार की है। ए
नाम दैनिक गति और दूसरी का नाम वार्षिक
है। चौबीस घंटे में पृथ्वी एक बार अपनी
पर घूम जाती है। इस घूम जाने को दैनिक
कहते हैं। दिन और रात इसी दैनिक गति के कारण
हैं। पृथ्वी का जो भाग सूर्य के सामने रहता है वहाँ
होता है। और जो उसके सामने नहीं रहता वहाँ
होती है।

पृथ्वी अपनी कील पर घूमती हुई आगे
बढ़ती जाती है और ३६५ दिन ६ घंटे में सूर्य के
ओर घूम आती है। इस गति का नाम वार्षिक ग
सूर्य के चारों ओर घूमने में पृथ्वी को जितना
लगता है उसको वर्ष कहते हैं। एक वर्ष ३६५ दि
होता है; परन्तु प्रतिवर्ष सूर्य की प्रदक्षिणा में पृथ्व
प्रायः ६ घंटे अधिक लग जाते हैं। इसलिये हर चौथे
फरवरी महीने में १ दिन बढ़ाकर उसको २९ दि
करना पड़ता है।

रेल पर सवार होने से जैसे किनारे के वृक्ष चलते
दिखाई देते हैं वैसे ही हम लोगों को सूर्य चलता

[illegible] दिखलाई देता है और पृथ्वी अचल जान पड़ती है। परन्तु यह बात ठीक नहीं है। पृथ्वी के घूमने के कारण ही सूर्य सवेरे पूर्व की ओर और सन्ध्या के समय पश्चिम की ओर [illegible] दिखलाई देता है।

कठिन शब्द—

प्रदक्षिणा, दैनिक, अचल, धुरी।

प्रश्न—

(१) पृथ्वी की गोलाई ग्रहण के समय कैसे प्रमाणित होती है?
(२) पृथ्वी की दो प्रकार की गति के नाम लो।
(३) दिन और रात होने का कारण क्या है?

पाठ १८

फसल के शत्रु

किसान जिस दिन से खेत बोता है उसी दिन से [illegible] कितने ही शत्रुओं का सामना करना पड़ता है। [illegible] होने के पहले फसल पर कई [illegible] होते [illegible] कहीं [illegible] फसल पर [illegible] कहीं चिड़ियाँ हानि [illegible] ता है और [illegible] कहीं कीड़े [illegible]

कर देते हैं। फिर भी ईश्वर की दया से इतना अच्छा है कि फसल के इन शत्रुओं में आपस में भी बैर रहता है। वे एक-दूसरे को भी खा जाते हैं। बड़ी-बड़ी चिड़ियाँ छोटी चिड़ियों को मार डालती हैं और छोटी चिड़ियाँ कीड़े-मकोड़े खाकर फसल को बचा हैं। यदि ऐसा न होता तो किसान की कुशल नहीं थी।

फिर भी इन शत्रुओं से बहुधा फसल को हानि होती है। बेचारा किसान तो गर्मी-सर्दी सहकर तैयार करता है और ये लोग उसे खा जाते हैं। पहले बतलाया जा चुका है कि खेती के शत्रु जंगली पशु या होते हैं। ये खेतों को कभी-कभी एक सिरे से दूसरे सिरे तक उजाड़ देते हैं। घर के पालतू पशु भी कभी फसल नष्ट कर डालते हैं।

पशुओं और पक्षियों से खेत की रखवाली की जा सकती है, इसलिये वे किसान को अधिक नहीं अखरते। आवश्यकता होने पर वह खेत में झोपड़ी डालकर रहने लगता है और पशु-पक्षियों को भगाता रहता है। परन्तु किसान के लिये छोटे छोटे कीड़ों का सामना करना बहुत कठिन है। ये कीड़े खेत के स्वामी के सामने ही खेत को नष्ट करते रहते हैं। बात यह है कि ये इतने छोटे-छोटे और संख्या में इतने अधिक होते हैं कि किसान उनका कुछ

नहीं कर सकता। केवल कुछ चिड़ियाँ ही ऐसी होती
जो इन कीड़ों को खा जाती हैं। गलगलिया, मैना,
…फोदक, कौवा और टटिहल आदि ऐसे ही कीड़ों
खाया करते हैं।

अब हम फसल को नष्ट करनेवाले कीड़ों का कुछ
…न करेंगे। दीमक ऐसे कीड़ों में से एक है। यह कीड़ा
…मीं के भीतर रहता और पौधों की जड़ें खा डालता है।
इससे बचने के लिये खेत में पानी देते रहना चाहिए और
… घास नीचर भी पाल लेना चाहिए क्योंकि भीतर
…पत्तों को खा जाते हैं। दीमक जिस खेत में लग जाती
उसके पौधे सूख सूखकर गिरने लगते हैं। दीमक बहुधा
…ख के खेतों में लगती है। इससे बचने के लिये
…ग गन्ने के बीज (ऊख के टुकड़ों) में तारकोल लगा
…र बोते हैं या नीम की खली पानी में घोलकर उससे
खेत सींचते हैं।

टिड्डी को तो सभी ने उड़ते देखा होगा। पहले
टिड्डी एक … के रूप में रहती है। वह भी बहुत
हानि करती है … ऊपर और पत्तियाँ खाकर ही
[illegible]

[illegible]
[illegible]

के समान, होता है। फल, फूल, पत्तियाँ और श
इन सभी को यह कीड़ा खा लेता है। इसके लग जा
फसल किसी काम की नहीं रह जाती।

एक कीड़ा मकोड़ा कहलाता है। यह ज्वार और
के पौधों में लगता है। पौधे का वह भाग, जहाँ यह ल
है, भीतर से खोखला होकर लाल रंग का हो जाता

इनके सिवाय और भी न जाने कितने मक
कीड़े होते हैं, जो खेतों को नष्ट करने में लगे रहते
बहुत से कीड़े जिस रंग के वे स्वयं होते हैं उसी रं
पत्तों में रहकर अपने को छिपाए रहते हैं। इससे चि
उन्हें पहचान नहीं पातीं। ये कीड़े फसल के साथ
रंग भी बदला करते हैं। जब फसल हरी होती है
भी हरे रंग के रहते हैं। जब वह पककर भूरा होने ल
[illegible] ये भी भूरे हो जाते हैं।

पाठ १३

कबीर के दोहे

साँच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप।
जाके भीतर साँच है ताके भीतर आप ॥१॥
शील रत्न सब ते बड़ो सब रत्नन की खान।
तीन लोक की संपदा बसी शील में आन ॥२॥
गोधन गजधन बाजिधन सबै रत्न धन खान।
जब आवै संतोष धन सब धन धूरि समान ॥३॥
मेरा मुझको कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपता क्या लागे है मोर ॥४॥
दुरबल को न सताइए जाकी मोटी हाय।
मुई खाल की साँस सों लोह भस्म है जाय ॥५॥
या दुनिया में आइ के छोड़ देइ तू ऐंठ।
लेना है सो लेइ ले उठी जात है पैंठ ॥६॥
ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करै आपो शीतल होय ॥७॥
माटी कहै कुम्हार सों तू क्या रूंधे मोहि।
इक दिन ऐसा होइगा मैं रूंधूंगा तोहि ॥८॥
जहां दया तहं धर्म्म है जहां लोभ तहं पाप।
जहां क्रोध तहं काल है जहां क्षमा तहं आप ॥९॥

साँचे श्राप न लागई साँचे काल न खाइ।
साँचे साँचा जो चले ताको काह नसाइ ॥१

कठिन शब्द—

साँच, बाजि, धूरि, पैठ, शीतल, श्राप, नसाइ।

प्रश्न—

(१) सत्य, शील और संतोष की महिमा वर्णन करो।
(२) दुर्बल को सताने से क्या होता है ?
(३) जहाँ दया तहँ धर्म है—इसका क्या अर्थ है ?

पाठ १४

रैमसे मैकडानल्ड

मेरा जन्म स्काटलैण्ड के एक छोटे से ग्राम में हुआ था। इस गांव के बहुत से लोग कृषक हैं। वे मछली मारकर अपना जीवन-निर्वाह करते हैं। मैं इन्हीं किसानों में एक था।

मेरा विद्यार्थी-जीवन साधारण था। मैं सुन्दर बगीचों में घूमा करता और टीलों पर खेला करता था। मेरा और

मेरा मन बहुत लगता था। मुझे कृषक-जीवन बहुत ही प्यारा था। किसान हल चलाते और गाते तथा मैं वीणा बजाता था। वसन्त में सारा देहात उनके मधुर संगीत से भर जाता था।

मेरी इच्छा विश्वविद्यालय में भी पढ़ने की थी। दीनता के कारण वह सफल नहीं हुई। पर मुझे उसके लिये दुःख नहीं है। मेरा तो प्रबल विश्वास है कि विश्वविद्यालय में पढ़कर बहुत से लोग सुधरने की जगह बिगड़ जाते हैं।

विज्ञान पढ़ने की मेरी बड़ी अभिलाषा थी। परन्तु मेरे पास पैसा न था। मैं लन्दन गया। मेरे कई दिन नौकरी की खोज में ही लग गए। उस समय मेरे पास एक फूटी कौड़ी भी न थी। मुझे पहला काम, जो वहाँ मिला, वह लिफाफों पर पता लिखना था। पर वह काम भी थोड़े दिनों का था। उन दिनों मुझे बड़ी चिन्ता थी, क्योंकि मैं जानता था कि लन्दन में बिना पैसे और बिना नौकरी के दिन काटना कठिन है। अन्त में मुझे एक मुनीम का स्थान मिल गया। उस समय मेरा वेतन १८ रुपये प्रतिसप्ताह था। इसी में अपना निर्वाह करता था, कुछ रुपया अपनी माँ को भेज देता था और कुछ रुपये फीस में खर्च करता था। तुम पूछोगे कि

में यह सब कैसे कर लेता था। इंग्लैंड के समान महँगे दे
में इतनी कम तनख्वाह में मैं ये सब काम कैसे चला लेत
था। मैं सादा और सस्ता भोजन करता था। कर्भ
कभी तो भूखा ही सो जाता था। चाय मैं नहीं ख़री
सकता था। अतएव इसके बदले गरम जल पीकर क
चला लेता था। मुझे यह बहुत पसन्द था। इ
भाँति किफ़ायत करके मैं कुछ बचा भी लेता था।

घर में मैं रात दिन कार्य्य करता था। इससे मै
एक बार बहुत बीमार पड़ गया। बीमारी से उठते ह
फिर काम करने लगा। काम न करता तो खाता क्या
इस तरह विज्ञान की पढ़ाई मुझे बहुत ही कठिन मते
हुई। तब मैं लेख लिखने लगा। इससे मुझे कु
आमदनी भी होने लगी। इसके बाद मैं संपाद
हो गया।

मुझे मजदूरों से बड़ा प्रेम है। मैंने उनके लि
सभाभवन और पुस्तकालय खोले। मजदूरों के बालकों के
अपने घर पर बुलाकर पढ़ाने में मुझे बड़ा सुख प्राप्त होत
था। मजदूर-दल के जन्म के तीन वर्ष बाद ही मैं उस द
का मेम्बर हा गया। तब से आज तक मैं बराबर उस द
का मम्बर हूँ। धीरे धीरे देश में मजदूरों का प्रभा
इतना बढ़ा कि शासन की बागडोर उन्हीं के हाथ में आग

ार में दो बार इंग्लैंड के प्रधान मंत्री के पद तक पहुँच
या। ईश्वर की कृपा से नेता बनने की मेरी अभिलाषा
्र्ण हो गई।

ठिन शब्द—

जीवन-निर्वाह, संगीत, विश्वविद्यालय, विज्ञान, संपादक, सभाभवन, पुस्तकालय।

प्रश्न—

(१) मैकडानल्ड साहब विश्वविद्यालय में क्यों न पढ़ सके?
(२) मजदूरदल किसे कहते हैं?

पाठ १५

सावित्री

मद्र देश के राजा अश्वपति की सावित्री नाम की एक कन्या थी। वह कन्या बड़ी सुशील और घर के कार्य में चतुर थी। जब वह बड़ी हुई तब राजा को उसके विवाह की चिन्ता हुई, परन्तु कोई योग्य वर न मिला। तब उन्होंने उसे अपना वर आप ही ढूँढ़ लेने की आज्ञा दी। वह कन्या, वृद्ध लोगों को साथ ले इधर उधर घूमती एक

आश्रम में पहुँची। यहाँ एक राजा अपनी रानी और पु
के साथ रहते थे। उनका राज्य छिन गया था। राजकुम
उनकी सेवा करता था। माता-पिता की सेवा करनेवा
सत्यवान नामक उस राजपुत्र को, सावित्री ने अ
योग्य वर मान लिया और लौटकर पिता को अप
निश्चय सुनाया। उस समय महाराज अश्वपति के सम
नारदजी विराजमान थे। वे बोले—सावित्री, तुमने
ठीक नहीं किया, क्योंकि राजकुमार सत्यवान विवा
एक वर्ष पश्चात मर जायगा। तब महाराज ने सावि
से कहा कि तुम दूसरा वर ढूंढो। सावित्री बोली
महाराज, जैसे काठ की हाँडी एक ही बार आग पर
सकती है और केला एक ही बार फलता है, वैसे ही क
एक ही बार पति को स्वीकार करती है। अब तो
निश्चय हो चुका। मैं किसी दूसरे से विवाह नहीं
सकती। कन्या का आग्रह देख, नारदजी को भी क
पड़ा कि वह विवाह स्वीकार किया जाय।

विवाह हो गया और सावित्री अपने पति सत्य
के साथ आश्रम में निवास करने लगी। उसने आ
राजसी ठाट बाट छोड़ दिए वल्कल वसन पहन कर वह
देव के समान सास ससुर की सेवा करने लगी।
देवताओं का पूजन और व्रत उपवास आदि भी क

। धर्माचरण में उसका प्रेम देख सास-ससुर प्रसन्न ते थे। धीरे धीरे वर्ष बीत गया और नारदजी की तलाई हुई वह कुघड़ी भी समीप आ पहुँची।

जब केवल तीन दिन शेष रह गए, तब सावित्री ने न्न-जल त्याग कर उपवास प्रारम्भ किया। सास-ससुर उसे समझाया पर वह अपने विचार पर स्थिर रही। चौथे न सत्यवान जब लकड़ी काटने वन को जाने लगा, तब सावित्री वन की शोभा देखने के लिये, सास-ससुर की आज्ञा ले, पति के साथ वन को गई। सत्यवान ने वट के क्ष पर चढ़कर लकड़ी काटी। इतने में उसके सिर में पीड़ा होने लगी। वह वृक्ष से उतर आया और सावित्री के समीप लेट गया। उसे निद्रा आगई। सावित्री का हृदय उस दिन बहुत विकल था।

कुछ काल पश्चात उसने हाथ में रस्सी लिये हुए एक डरावनी मूर्ति को आते देख पूछा—महाराज! आप कौन हैं? उस मूर्ति ने उत्तर दिया—मैं यमराज हूँ।

सावित्री—महाराज! मैं सुनती हूँ कि प्राण हरण के लिये आपके दूत आते हैं। आप स्वयं यहाँ पधारे?

यमराज—सावित्री! धर्मात्मा जनों के लिये मैं स्वयं आता हूँ। सत्यवान धर्मात्मा है, इसीलिये मुझे आना

भूलकर वे दूसरों का मुँह कभी तकते नहीं।
कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं ॥२

जो कभी अपने समय को यों बिताते हैं नहीं।
काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं ॥
आज कल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं।
यत्न करने से कभी जो जी चुराते हैं नहीं ॥
बात है वह कौन जो होती नहीं उनके किये।
वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिये ॥३

चिलचिलाती धूप को जो चाँदनी देवें बना।
काम पड़ने पर करें जो शेर का भी सामना ॥
जो कि हँस हँसकर चबा लेते हैं लोहे का चना।
'है कठिन कुछ भी नहीं' जिनके है जी में यह ठना ॥
कोस कितने ही चलें पर वे कभी थकते नहीं।
कौन सी है गाँठ जिसको खोल वे सकते नहीं ॥४

पर्वतों को काट कर सड़कें बना देते हैं वे।
सैकड़ों मरुभूमि में नदियाँ बहा देते हैं वे ॥
गर्भ में जलराशि के बेड़ा चला देते हैं वे।
जंगलों में भी महा मंगल रचा देते हैं वे ॥
भेद नभतल का उन्होंने है बहुत बतला दिया।
है उन्होंने ही निकाली तार की सारी क्रिया ॥५

पाठ १७

सिंहगढ़-विजय

जब महाराज छत्रपति शिवाजी औरङ्गजेब के बंधन से मुक्त होकर सकुशल स्वदेश लौट आए, तब उन्होंने फिर लड़ाई छेड़ दी और लगभग दो वर्ष तक मुगलों से लड़ते रहे। परन्तु अंत में शिवाजी और औरङ्गजेब के बीच संधि हो गई। मुगल-बादशाह ने शिवाजी को मरहठों का राजा स्वीकार कर लिया। दो साल तक दोनों के बीच शांति रही।

महाराज शिवाजी ने इस समय में अपनी शक्ति खूब प्रबल कर ली और शासन के प्रबंध की नींव पक्की कर ली। महाराष्ट्र-सेना के संगठन में भी महाराज ने पूर्ण उद्योग किया। परन्तु वास्तव में यह सभी जानते थे कि मुगलों और मरहठों के बीच में बहुत दिन तक शांति नहीं रह सकती। लड़ाई फिर छिड़ गई। मरहठों ने मुगल-राज्य में लूट-मार प्रारम्भ कर दी। बहुत से किलों पर, जो मुगलों के हाथ में थे, मरहठों ने आक्रमण किया और कुछ को ले भी लिया।

कोंढना नामक किला भी इस समय मुगलों के अधीन था। वह अपनी मजबूती के लिये दक्षिण में प्रसि

के लेने में उन्हें कुछ समय लग गया। बस इतनी है देर में मरहठों ने उनमें से कितनों ही का काम तमाम कर दिया।

राजपूत बड़ी वीरता से लड़े परन्तु मरहठों के सामने उनके पैर उखड़ गए। तब अन्त में मरहठा सरदार तानाजी और राजपूत-सरदार उदयभान तलवार लेकर आपस में भिड़ गए। मरहठे "हर ! हर ! महादेव !" की ध्वनि से एक दूसरे को उत्साहित कर रहे थे। तानाजी और उदयभान बड़ी वीरता से लड़े। अन्त में दोनों एक दूसरे की तलवार से घायल होकर गिर पड़े। तानाजी के भूमिशायी होने पर उनके भाई सूर्याजी ने मरहठों को और भी अधिक आवेश से लड़ने के लिये प्रोत्साहित किया। अन्त में १२०० राजपूत खेत रहे और क़िला मरहठों के हाथ में आ गया।

गढ़ के विजय हो जाने पर मरहठों ने अन्दर के समस्त झोंपड़ों को जला दिया। इसमें इतनी ऊँची लपटें निकलीं कि वहाँ से ९ मील दूर रायगढ़ में बैठे हुए शिवाजी महाराज ने भी उसे देखा और यह अनुमान कर लिया कि वीर-रत्न तानाजी ने विजय प्राप्त कर ली है।

शिवाजी महाराज हर्ष और उत्साह के साथ दूसरे दिन प्रातःकाल अपने लाड़ले सरदार तानाजी के आ

और उन्हें गले लगाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। परन्तु जब उन्होंने सुना कि तानाजी ने अपने प्राणों का होम करके अपने प्रण का पालन किया तब उनके दुःख का पारावार न रहा। कोंडना की विजय के लिये इस पुरुष-सिंह ने अपना जीवन तक अर्पण कर दिया। इस घटना को अमर करने के लिये शिवाजी महाराज ने कोंडना का नाम सिंहगढ़ रक्खा। यह किला अभी तक उस वीर-श्रेष्ठ की कीर्ति को अजर-अमर बनाए हुए है।

कठिन शब्द—

संगठन, वास्तव, पुरुषार्थी, प्रस्थान, शौर्य, सूरमा, संतरी, ध्वनि, प्रोत्साहित, प्रतीक्षा, पारावार।

प्रश्न—

१. [illegible] का नाम सिंहगढ़ क्यों रक्खा गया ?

२. [illegible] से प्रयोग करो—

[illegible]

पाठ १८

देहाती बैंक

हमारे देश में जितने मनुष्य खेती करते हैं और किसी देश में नहीं करते। यहाँ भूमि का नहीं है, इसीसे यहाँ किसानों की संख्या बहुत है। परन्तु, बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनके यहाँ के किसान दीन रहते हैं। ऐसे बहुत किसान देखने में आते हैं जो खेती करके भाँति अपनी जीविका चलाते हों। अधिक संख्या तो लोगों की है जो खाने-पहनने के लिये भी दुखी रहते उनके घरों में व्याधि सदैव बनी रहती है। उनके हल-बैल तक के लिये पैसे नहीं होते।

यह दशा होने के कारण किसान सदा खाली रहते हैं। यदि कहीं एक फसल में पानी न बरसा और कोई विपत्ति आ गई, तो फिर दूसरी फसल के उनके पास कोई साधन नहीं रहता।

किसानों की दशा गाँव के सभी लोग जानते उन्हें कोई भी रुपया देने को तैयार नहीं होता और रुपया मिला भी तो बहुत अधिक ब्याज माँगा जाता

किसान बेचारा निरुपाय होकर महाजन के फन्दे में फंस जाता है।

प्रायः देखा जाता है कि किसान ऋण तो ले लेता है पर ब्याज की भारी दर होने के कारण उसे पटा नहीं पाता। उसका ऋण प्रत्येक वर्ष बढ़ता चला जाता है। महाजन लोग बहुधा रुपया वसूल करने के लिये नालिश कर देते हैं। इस प्रकार किसान का बहुत सा समय मुकद्मेबाजी में चला जाता है। अन्त में उसके हल-बैल, घर-द्वार और लोटा-थाली सब नीलाम पर चढ़ जाते हैं। बेचारा किसान किसी काम का नहीं रह जाता। उसे एक-एक के दस-दस देने पड़ते हैं और घर-द्वार भी छिन जाता है।

ऐसे किसानों की स्थिति में सुधार करने के लिये ही देहाती बैंक खोले गये हैं। इन बैंकों का यह काम है कि वे आवश्यकता के अनुसार किसानों की सहायता करें। उन्हें थोड़े ब्याज पर रुपया उधार दें और किसानों को किन किन हथियारों और यन्त्रों से काम करना चाहिए यह बतलाएं। उन्हें खेती में सहायता देने के लिये अच्छे बैल, अच्छी खाद और अच्छे बीज कहां से मिल सकते हैं, इन सब बातों को बतलाने में भी बैंक उनकी सहायता करें। इन बैंकों से किसान बहुत कुछ लाभ उठा सकते हैं और उनकी

दशा भी सुधर सकती है। यह भी काम बैंक का है कि वह किसानों की उपज को अच्छे दामों पर बेचने के लिये प्रबन्ध करे; क्योंकि बहुधा किसान अपनी वस्तुओं को बेचने की रीति नहीं जानते। कुछ चालाक लोग फसल के अवसर पर गाँवों में पहुँचकर बहुत सस्ते मूल्य पर उनकी उपज खरीद लेते हैं। सारांश यह है कि बैंक किसानों की पूरी तरह से सहायता करे और किसान भी सचाई के साथ बैंक का रुपया चुकाकर रुपया अपने काम में लाएँ।

कठिन शब्द—

साधन, व्याधि, मुकदमेबाजी, सारांश।

प्रश्न—

(१) देहाती बैंकों के काम बतलाओ।
(२) देहाती बैंकों से किसानों को क्या लाभ है?

पाठ १९

वर्षा-काल

(१)

आया यह अब वर्षा-काल,
जग का हुआ और ही हाल।
नहीं कहीं अब हाहाकार,
गर्मी से न व्यथित संसार॥

(२)

नहीं लूह अब सन सन चलती,
अब न आग-सी धरती जलती।
"प्यास प्यास, पानी पानी" नर
चिल्लाते अब नहीं कहीं पर॥

(३)

अब न कहीं पर उड़ती धूल,
मुरझाते न लता-तरु-फूल।
रहा न रवि-किरणों का त्रास,
घिरा बादलों से आकाश॥

(४)

बरस रहा जल चारों ओर,
मेंढक सुख से करते शोर।

कहीं पपीहा करता शोर,
कहीं नाचते प्रमुदित मोर॥

(५)

पृथ्वी, खेत, बाग, वन, तरुवर,
हरे हरे दिखलाते सुन्दर।
बीरबहूटी की छवि न्यारी,
आँखों को लगती अति प्यारी॥

(६)

शीतल पवन वेग से बहता,
छिपा बादलों में रवि रहता।
झड़ी रात-दिन की लग जाती,
दिन को रजनी हो हो जाती॥

(७)

बिजली चमक चमक रह जाती,
झिल्ली हैं झंकार मचाती।
पृथ्वी की हरियाली सुन्दर,
लगती ऐसी भली मनोहर॥

(८)

[illegible] हल [illegible] किसान,
[illegible] धान [illegible]।

कहीं प्रेम से मेंड़ बनाते,
बैल गाय हैं कहीं चराते ॥

(९)

झूले पड़े हुए हैं घर-घर,
अतिप्रफुल्ल-मन हैं नारी-नर ।
ललना झूल-झूल सुख पातीं,
कजली औ मलार सब गातीं ॥

(१०)

मोदमयी अतिशय सुखकारी,
वर्षा-ऋतु सबको है प्यारी ।
कृषिप्रधान है देश हमारा,
हमें इसी से पावस प्यारा ॥

कठिन शब्द—

व्यथित, लता-तरु-फूल, श्राव, प्रमुदित, तरु,
छवि, रजनी, ललना, मोदमयी ।

प्रश्न—

(१) वर्षा के आने से दुनिया में क्या परिवर्तन आ जाता है ?
(२) तुमको वर्षा क्यों प्यारा है ?
(३) वर्षा के दिन रात के समान क्यों हो जाता है ?

पाठ २०

अहल्याबाई की योग्यता

लगभग डेढ़ सौ वर्ष की बात है कि विन्ध्याच
पहाड़ के रहनेवाले भील, अपने एक सर्दार की आ
से, अपनी इन्दौर की महारानी अहल्याबाई के विरु
बलवा करने का दृढ़ संकल्प कर जिले के अफसर
आज्ञा के विरुद्ध काम करने लगे। न तो जिले के अफस
के बुलाने से कोई आता और न कोई उसके कहने
ध्यान ही देता। सब अपनी-अपनी इच्छा के अनुस
विचरने और ढिठाई करने लगे।

दिन पर दिन दशा बिगड़ती देख जिले का अफस
डर गया। उसके पास सरकारी रुपया भी ढेर
रहता था, इसलिये उसे और भी अधिक भय हुआ
जहाँ तक जल्द हो सका, उसने इसकी खबर महारानी
कानों तक पहुँचाई। महारानी ने खबर पाते ही दो
स्वयं अपने हाथ से, एक भीलों के सरदार को औ
दूसरा जिले के अफसर को, लिखकर अपने मन्त्री
दिए और आज्ञा दी कि आप इन पत्रों को स्वयं जा
दीजिए।

महारानी ने जिले के अफसर के नाम जो पत्र लिखा था उसका भावार्थ यह था—"विद्रोह, उपद्रव और अनेक प्रकार की अशांति का बीज वहाँ बोया जाता है जहाँ

अन्याय और [illegible]
[illegible]

रख, हाकिम लोग उस खजाने को, जो उनकी
होती है, बुरी तरह खर्च करते हों। परन्तु मेरे राज्य
तो, जहाँ तक मैं जानती हूँ, ये बातें नहीं हैं। मैं स
वैसे बुरे दिन को दूर रखने का यत्न करती रहती
फिर इस अशांति के बीज बोने का क्या कारण है?
मन्त्री साहब को भेजती हूँ। आशा है कि ये
ठीक कर देंगे।"

महारानी ने भीलों के सरदार को लिखा—"
की प्रजा की कठिनाइयाँ दूर करने के लिये राजा
न हो, जहाँ उनकी किसी बात पर विचार न कि
जाता हो, जहाँ उनके स्वत्व और अधिकारों की
न होती हो, जहाँ अन्याय और अत्याचार से उनका
घुसा जाता हो, वहाँ प्रजा राजा के विरुद्ध होने को वि
होती है। परन्तु मेरे यहाँ तो सबके लिये दरवाजा
खुला हुआ है और मैं तन, मन और धन से प्रति
तुम्हारी रक्षा करने को तैयार हूँ। हे मेरी प्यारी प्र
तुम्हें किसने यह नीच काम करने को उतारू किया
चाहती हूँ कि तुम आकर स्वयं अपने दुःख मुझसे क
मन्त्री तुम्हारे यहाँ भेज जाते हैं। आशा है, ये तु
लिये उचित प्रबन्ध कर देंगे।"

कुछ दिन बाद भील सरदार अहल्याबाई के

राजेश्वरी—यह तुम्हारे कठिन परिश्रम का फल

हलधर—नहीं, यह तो सब तुम्हारी सहायत हुआ है।

राजेश्वरी--अगले साल तुम एक मजदूर रख के अकेले काम करते करते थक जाते हो।

हलधर—मैं तो अकेले इसके दुगुने खेत जोत पर खेत मिलें तब न।

राजेश्वरी—मैं तो इस साल एक गाय अवश्य लूँ गाय के बिना घर सूना लगता है।

हलधर—मैं पहले तुम्हारे लिए कङ्गन बनवा कर दूसरी बात करूँगा। महाजन से रुपये ले लूँगा।

राजेश्वरी—कङ्गन की इतनी जल्दी क्या है?

हलधर—जल्दी क्यों नहीं है? तुम्हारे मैके बुलावा आएगा ही। नए गहने बिना जाओगी तुम्हारे गाँव घर के लोग मुझे हँसेंगे या नहीं?

राजेश्वरी—तो तुम बुलावा फेर देना। मैं ऋण ले कङ्गन न बनवाऊँगी। हाँ, गाय पालना आवश्यक किसान के घर में गाय न हो तो किसान कैसा! तु लिए [illegible] का [illegible] लाया करूँगी। बढ़ी बना, [illegible] जाय।

फत्तू—महाजन से तो भाई कभी गला ही नहीं छूटता।

हलधर—दो साल भी तो लगातार ठीक उपज नहीं होती; गला कैसे छूटे ?

फत्तू—[एक सवार को आते देखकर] वह घोड़े पर कौन आ रहा है ? कोई अफसर है क्या ?

हलधर—नहीं, अपने ठाकुर साहब [मालगुजार] तो हैं। घोड़ा नहीं पहचानते ?

[सबलसिंह मालगुज़ार आता है। दोनों आदमी झुक झुक कर जुहार करते हैं। राजेश्वरी घूँघट निकाल लेती है।]

सबल—[फत्तू से] कहो बड़े मियाँ, गाँव में सब खैरियत है न ?

फत्तू—जी हुज़ूर।

सबल—अभी किसी अफसर का दौरा तो नहीं हुआ।

फत्तू—नहीं सरकार, अभी तक तो कोई न आया।

सबल—और न शायद आएगा हाँ। परन्तु यदि के आ भी जाए तो गाँव में किसी तरह की बेगार न देना साफ़ कह देना कि बिना मालगुज़ार की आज्ञा के लोग कुछ नहीं दे सकते। मुझसे जब कोई पूछेगा तो दे

हलधर—खाने पीने का इनको कोई विचार नहीं है। कहते हैं कि खाने पीने से जात नहीं जाती, जाति खराब काम करने से जाती है। ऊँची जातिवाले अपने दुर्गुणों से शूद्र और शूद्र अपने अच्छे गुणों से ऊँची जातिवाले हो सकते हैं।

राजेश्वरी—बहुत ठीक कहते हैं। अच्छा, तो पूनो के दिन बुलावा भेज देना। उनके मन की बात रह जाएगी।

हलधर—खूब मन लगाकर भोजन बनाना।

राजेश्वरी—जब हमारे मालगुजार इतने प्रेम से भोजन करने आएँगे तो कोई बात उठा थोड़े ही रक्खूँगी। बस इसी पूनो को बुला भेजो, अभी पाँच दिन हैं।

हलधर—अच्छा तो, चलो पहले घर की सफाई तो कर डालें।

कठिन शब्द—

सूना, बुलावा, बरसी, जुहार, खैरियत, गौना, दौरा, निमंत्रण, बेदखली, कुड़की।

प्रश्न—

(१) अच्छा मालगुजार अपने किसानों से कैसा व्यवहार करता है?

(२) मधुबनसिंह का [illegible] के बारे में क्या विचार है?

पाठ २२

गिरधर की कुण्डलियाँ

गुन के गाहक सहस नर बिन गुन लहै न कोय।
जैसे कागा कोकिला शब्द सुनै सब कोय॥
शब्द सुनै सब कोय कोकिला सबै सुहावन।
दोऊ को एक रङ्ग, काग सब भये अपावन॥
कह गिरधर कविराय सुनो हो ठाकुर मन के।
बिन गुन लहै न कोय सहस नर गाहक गुन के॥१

झूठा मीठे वचन कहि ऋण उधार लै जाय।
लेत परम सुख ऊपजै लैके दियो न जाय॥
लैके दियो न जाय ऊच अरु नीच बतावै।
ऋण उधार की रीति माँगते मारन धावै॥
कह गिरधर कविराय रहै जनि मन में रूठा।
बहुत दिना है जाय कहै तेरो कागद झूठा॥२

साईं ये न विरोधिए गुरु, पण्डित, कवि, यार।
बेटा, बनिता, पौरिया, यज्ञ करावनहार॥
यज्ञ करावनहार, राजमंत्री जो होई।
विप्र, परोसी, वैद, आपको तपै रसोई॥
कह गिरधर कविराय युगन ते यह चलि आई।
इन तेरह सों तरह दिए बनि आवै साईं॥३

बिना बिचारे जो करे सो पाछे पछताय ।
काम बिगारे आपनो जग में होत हँसाय ॥
जग में होत हँसाय चित्त में चैन न पावै ।
खान पान सन्मान राग रँग मनहिं न भावै ॥
कह गिरधर कविराय दुःख कछु टरत न टारे ।
खटकत है जिय माहिं कियो जो बिना बिचारे ॥४॥

साईं अपने चित्त की भूल न कहिये कोय ।
तब लग मन में राखिए जब लग कारज होय ॥
जब लग कारज होय भूल कबहूँ नहिं कहिए ।
दुर्जन तानो होय आप सीरे है रहिए ॥
कह गिरधर कविराय बात चतुरन के ताईं ।
करतूती कह देत आप कहिए नहिं साईं ॥५॥

साईं अपने भ्रात को कबहुं न दीजै त्रास ।
पलक दूर नहिं कीजिए सदा राखिए पास ॥
सदा राखिए पास त्रास कबहूं नहिं दीजै ।
त्रास दियो लंकेश ताहि की गति सुन लीजै ॥
कह गिरधर कविराय राम सों मिलयो जाई ।
पाय विभीषण राज लंकपति बाज्यो साईं ॥६॥

[illegible]
[illegible]

केवट है मतवार नाव मझधारहिं आनी।
आँधी चलत उदण्ड तेहुँ पर बरसै पानी॥
कह गिरधर कविराय नाथ हो तुमहिं खिवैया।
उतहि दया को डाँड़ घाट पर आवै नैया॥७॥

कठिन शब्द—

लहै, गाहक, अपावन, रूठा, साईं, वनिता, चैरिया, तरह दिए, सन्मान, सीरे, त्रास, भौंर, केवट, मझधार, उद्दण्ड।

प्रश्न—

(१) काग और कोकिला में समानता तथा भेद क्या है?
(२) किन लोगों से विरोध न करना चाहिए?
(३) भाई से मेल क्यों रखना चाहिए?
(४) सातवीं कुण्डलिया में नैया का अर्थ क्या है?

पाठ [illegible]

दिल्ली

दिल्ली आजकल हमारे देश की राजधानी है। प्राचीन काल में यहां हिन्दू राजा थे। सबसे अन्तिम हिन्दू-सम्राट पृथ्वीराज यहीं रहते थे। उनके पश्चात यहां मुसलम

बादशाह रहे। शाहजहाँ बादशाह ने इस नगर की उन्नति की। इस बादशाह को इमारतें बनवाने का शौक था। आगरे में ताजमहल या ताजबीबी का रौ जो सुन्दरता में संसार भर में प्रसिद्ध है, उसी बाद
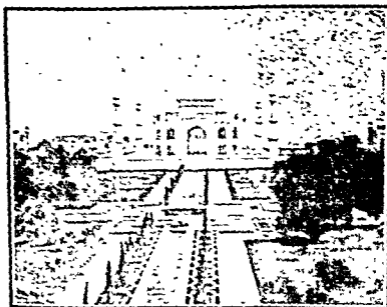
आगरे का ताजमहल

ने बनवाया था। दिल्ली में भी इसने बहुत सी अ अच्छी इमारतें बनवाई थीं

यमुना नदी के किनारे अपने रहने के लिये इसने सुन्दर महल बनवाया था। ठीक इस महल के सामने छोटी-सी पहाड़ी पर जुम्मा मसजिद है जिसके सु

करते थे। बादशाह के बैठने के लिये ऊँचा सिंहासन हुआ था, और नीचे फर्श पर प्रजा के बैठने के लिये स्थान था। मुगल बादशाहों को यह गर्व था कि उनकी प्रजा उनके पास सुगमता से पहुँच सकती थी।

दीवाने-आम के पूर्व में दीवाने-खास है। यहाँ बादशाह अपने मंत्रियों और सरदारों के साथ राज-काज की सलाह किया करते थे। यह इमारत बिलकुल सफ़ेद संगमर्मर की बनी हुई है। बीच-बीच में सोने के बेलबूटे कढ़े हुए हैं। पहले इसकी छत बिलकुल चाँदी की बनी हुई थी। प्रसिद्ध मयूर-सिंहासन इसी महल में रक्खा रहता था, जिसको नादिरशाह ले गया।

जिस चबूतरे पर मयूर-सिंहासन रक्खा रहता था उस पर एक फारसी की कविता लिखी हुई है, जिसका अर्थ यह है कि यदि पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है तो वह यहीं है, यहीं है, यहीं है।

महल में संगमर्मर के स्नानागार बने हुए हैं, जहाँ बादशाह नहाया करते थे। इनमें स्वच्छ पानी के फव्वारे छूटा करते थे। फव्वारे तो अब टूट गए हैं, पर संगमर्मर का फर्श अभी तक बना हुआ है। चहारदीवारी के भीतर मुसम्मन बीना मसजिद है जो श्वेत संगमर्मर की बनी हुई है।

बनवाया है। पर अब विद्वानों की यह राय है कि
ने इस मीनार को बनवाया था। इसकी ऊँचाई २
फुट है। इसमें ३७९ सीढ़ियाँ लगी हुई हैं। मीनार
दक्षिण में तुगलकाबाद शहर की टूटी-फूटी
दिखाई देती हैं। यहाँ गयासुद्दीन तुगलक की राजधानी
कुतुबमीनार और नई दिल्ली के बीचवाले मैदान पर
इमारतें, मकबरे और मसजिदें टूटी-फूटी दशा में
हैं, जो हमको कितने ही प्राचीन राजाओं और बाद
का स्मरण कराती हैं। नई दिल्ली में बहुत-सी दे
योग्य इमारतें बन गई हैं। राजधानी की इमारतें
स्थान पर बनी हैं उस स्थान का नाम रायसीना

कठिन शब्द—

**चहारदीवारी, फर्याद, स्नानागार, मकब
मीनार, स्तम्भ, फर्श।**

प्रश्न—

(१) मयूरसिंहासन के स्थान के चबूतरे पर क्या लिखा है ?
(२) दिल्ली किस किस जाति के राजाओं की राजधानी रही
(३) कुतुबमीनार के बारे में तुमने क्या पढ़ा है ?
(४) दिल्ली की प्रसिद्ध ऐतिहासिक इमारतें कौन कौन हैं ?

पाठ २४

म्युनिसिपैल्टी

रामचन्द्र गणेश आगरकर अपने पिता गणेश लक्ष्म
आगरकर के साथ टिमरनी से रामटेक जा रहा था। गाड़
पर से नागपुर के पुतलीघरों को देख उसने अपने पिता
पूछा—पिताजी, वहाँ कई स्थानों से धुआँ क्यों निक
रहा है?

गणेश—वहाँ बहुत से पुतलीघर हैं। उन पुतलीघर
में कलों को चलाने के लिये आग जलाई जाती है। आ
का धुआँ ऊँची ऊँची चिमनियों से निकलता है ताकि व
ऊपर ही रह जाय; शहर में न फैलने पाए।

राम०—क्या लौटते समय नागपुर में ठहर कर आ
मुझे पुतलीघर दिखा देंगे?

गणेश—अच्छा, दिखा दूंगा।

लौटते समय नागपुर में ठहर कर रामचन्द्र
पुतलीघर तथा वहाँ के दूसरे स्थान देखे। वे संध्या के समय
शुक्रवारी तालाब के पास पहुँचे। वहाँ एक बगीचा
जिसमें कई बेंचें पड़ी हुई थीं। वे लोग एक बेंच पर
बैठ और बातचीत करने लगे

राम०—पिताजी, यह बेंच किसने बनवा दी है?

गणेश—यह बेंच, बगीचा तथा बिजली की रोशनी आदि सब प्रबन्ध म्युनिसिपैल्टी ने किया है।

राम०—म्युनिसिपैल्टी किसे कहते हैं?

गणेश—शहरों तथा नगरों में, जहाँ जन-संख्या आठ हजार से अधिक होती है, लोगों के सुभीते, स्थान की स्वच्छता तथा बालकों की शिक्षा के प्रबन्ध के लिये एक संस्था बनाई जाती है। उस संस्था को म्युनिसिपैल्टी कहते हैं।

राम०—क्या यह कार्य सरकार नहीं करती?

गणेश—लोगों की रक्षा आदि कामों का प्रबन्ध सरकार करती है। पर अपने अपने गाँवों तथा नगरों के कुछ लाभदायक प्रबन्ध जनता के हाथ में दे दिए गए हैं।

राम०—म्युनिसिपैल्टी को इन कामों के लिये रुपया कहाँ से मिलता है?

गणेश—कुछ रुपया सरकार देती है; कुछ रुपया लालटेन, बिजली और नलकल पर जो कर (टैक्स) लगाया जाता है, उससे निकल आता है। कुछ रुपया बाजारों की दूकानों के भाड़े तथा बिक्री पर लगाए कर से मिल जाता है। टौन ड्यूटी, स्कूलों की फीस तथा कांजी हौस से भी कुछ आमदनी हो जाती है।

राम०—टौन ड्यूटी से रुपया किस प्रकार मिलता है?

गणेश—म्युनिसिपैल्टी की सीमा के भीतर जो कुछ बेचने आता है, उस पर जो कर म्युनिसिपैल्टी लेती है उसे टौन ड्यूटी कहते हैं।

राम०—म्युनिसिपैल्टी अपनी आमदनी को कैसे खर्च करती है?

गणेश—म्युनिसिपैल्टी अपनी सीमा के भीतर स्वच्छता का प्रबन्ध करती है। वह सड़कें तथा नालियाँ बनवाती है। उनको साफ कराती है। प्रकाश के लिये लम्प लगवाती है। बाजारों में सफाई रखती है। सड़ी, गली, गन्दी चीजों की बिक्री पर देखरेख रखती है। स्वच्छ जल के लिये नल लगवाती है। रोगियों के लिये चिकित्सा तथा औषधि का प्रबन्ध करती है। शीतला तथा प्लेग के टीके लगवाती है और उनसे बचने के लिये भाँति भाँति की सहायता देती है। बालकों की शिक्षा के लिये कई प्रकार की शालाएँ खोलती है, स्वच्छ वायु के लिये बगीचे बनवाती है। वह ऐसे अनेक कार्य करती है जिनसे जनता को लाभ पहुँचे।

राम०—म्युनिसिपैल्टी में कौन लोग काम करते हैं?

गणेश—म्युनिसिपैल्टी की सभा कमेटी के अधिकतर मेम्बर जनता चुनती है सरकार भी कुछ लोगों को अपनी

श्न—

(१) म्युनिसिपैल्टी की सभा (कमेटी) कैसे बनाई जाती है ?

(२) म्युनिसिपैल्टी की आमदनी कहां से होती है ?

(३) म्युनिसिपैल्टी का खर्च किस प्रकार होता है ?

(४) टौन ड्यूटी और टैक्स किसे कहते हैं ?

एहितें कवन व्यथा वलवाना।
जो दुखु पाइ तजिहि तनु प्राना॥
पुनि धरि धीर कहइ नरनाहू।
लेइ रथ संग सखा तुम जाहू॥

सुठि सुकुमार कुमार दोउ जनकसुता सुकुमारि।
रथ चढ़ाइ देखराइ वनु फिरेहु गये दिन चारि॥

जौं नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई।
सत्य-संध दृढ़-व्रत रघुराई॥
तौ तुम्ह विनय करेहु कर जोरी।
फेरिय प्रभु मिथिलेसु-किसोरी॥
जब सिय कानन देखि डेराई।
कहेहु मोरि सिख अवसरु पाई॥
सासु ससुर अस कहेउ सँदेसू।
पुत्रि फिरिय वन बहुत कलेसू॥
पितुगृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी।
रहेहु जहाँ रुचि होइ तुम्हारी॥
एहि विधि करेहु उपाय कदम्बा।
फिरइ न होइ प्रान अवलम्बा॥
नाहि त मोर मरनु परिनामा।
कछु न बसाइ भये विधि वामा॥

अस कहि मुरुछि परे महि राऊ।
राम लषनु सिय आनि देखाऊ॥

दोहा—पाइ रजायसु नाय सिर रथु अति बेगु बनाइ।
गयेउ जहाँ बाहर नगर सीय सहित दोउ भाइ॥

कठिन शब्द—

बिरहदव दाढ़े, मरणासन, आचक, पुनी परितोषे, जनक-जननी, जुग पानी, सार, भुआ पदपदुम, विषादू, बिबस, सुरलोकू, व्यथा, भरता सुठि, सत्यसंध, दृढ़-व्रत, मिथिलेसु-किसोरी, करी षसाइ, रजायसु।

प्रश्न—

(१) नीचे लिखे शब्दों का अन्तिम 'उ' निकाल देने से क्या कुछ बदल जायगा?

मनु, मोहू, छोहू, मयंकु, रामु, तनु, भरताहू, जनु, मिथिलनगर, सासु, सँदेसु, कलेसु, भरतु, रजायसु, रथु, बेगु।

(२) वन जाते समय रामचन्द्रजी सब भार किस पर छोड़ गए

(३) सीता जी के लिए दशरथजी ने क्या सँदेसा कहलाया?

पाठ २६

हम्मीर की माता

(१)

एक वार चित्तौर के राणा लक्ष्मणसिंह के ज्येष्ठ पुत्र अरिसिंह आखेट के लिये अन्दावा नामक एक वन को गये। अरिसिंह तथा उनके साथी एक जंगली सुअर को देखकर उसके पीछे दौड़े। सुअर इन लोगों को अपने पीछे आते हुए देखकर एक खेत में घुस गया। इस खेत के स्वामी की एक कन्या थी। उस समय वही मचान पर बैठकर खेत की रक्षा कर रही थी। सुअर ने खेत में प्रवेश किया है। राजपुत्र सेवक आदि के साथ साथ उसके खेत में प्रवेश कर सुअर को मारेंगे। खेती बिलकुल नष्ट हो जायगी। इस भय से किसान की बेटी ने मचान पर खड़ी होकर अरिसिंह से कहा—राजकुमार ! आप खेत में घुसकर खेती को नष्ट न कीजिए। मैं सुअर को अभी मार लाती हूँ। सब लोग रुक गए।

किसान की लड़की ने खेत में से एक पौधा काटकर उसके आगे के हिस्से को खूब चोखा कर लिया। फिर खेत में प्रवेश कर उसी से सुअर को मारकर वह राजकुमार के सम्मुख ले आई किसान की लड़की का पुरुषों से

सबका कौतुक बन गया। टूटे हुए पैर से कृषक-पुत्री समीप आकर उसने कहा—तुम साधारण स्त्री नहीं हो तुम हमारे राजपुत्र की रानी बनो। मैं तुमसे कुछ नहीं चाहता। तुम इनके साथ घोड़े पर चढ़ आखेट और लड़ाई करना।

कन्या लज्जित होकर चली गई। अरिसिंह की वास्तव में उस कन्या से विवाह करने की इच्छा थी।

उन्होंने कहा—यदि यह स्त्री क्षत्रिय-कन्या हो मैं इससे विवाह करूँगा।

राजपुत्र ने राजधानी जाने का विचार छोड़ दिया। खोज करने से उनको विदित हुआ कि यह किसी क्षत्रिय की कन्या है।

वृद्ध कृषक को बुलाकर राजपुत्र ने उसकी पुत्री से विवाह का प्रस्ताव किया। प्रस्ताव को उसने स्वीकृत कर लिया और विवाह हो गया। इसी रानी का पुत्र हम्मीर नाम से प्रसिद्ध हुआ।

कठिन शब्द—

आखेट, मुग्ध परिचय, यथेष्ट, कौतुक, प्रस्ताव।

प्रश्न—

(१) राजपुत्र का सबके लिए कौतुक क्या बन गया?

(२) अरिसिंह ने किसान की बेटी से क्या विवाह किया?

पर दौड़ रहा है। उसने पीछे फिरकर देखा। कोई सौ
की दूरी पर एक बड़ा भारी पशु आरहा था। वह देखते
घबड़ा गया। उसने काँप कर कहा बिहारी ! अरे बाप
बिहारी ! जरा देख तो ! बिहारी ने घूम कर देखा।
जानवर झपटते हुए आरहा था। वह टट्टू के बराबर
था। बिहारी ने देखते ही कहा—ओह ! यह बच्चे
मा है !

उसी क्षण दोनों को सब समझ में आगया
बच्चे के रक्त को सूँघती हुई मादा आ रही थी। उन्हें ऐसा
जान पड़ा जैसे साक्षात मृत्यु आ रही हो। मादा ने भी
लोगों को देख लिया। उसने क्रोध के मारे अपनी चाल
कर दी। उसके रोंगटे खड़े हो रहे थे। उसने अपना
सा सिर ऊपर उठाया और सुअर सा लम्बा मुँह फैला
दिया और आँधी के समान पत्तियाँ उड़ाती उन लोगों
झपटी। बिहारी ने भालू का बच्चा ले लिया और अहेरी
कहा—बाण चलाओ। पर अहेरी सिर से पैर तक काँपता
खड़ा रह गया। बिहारी ने फिर कहा—चलाओ जी !
देखते क्या हो ? अहेरी ने बाण न चलाया। वह भाग कर
एक वृक्ष पर चढ़ने लगा। यह देख बिहारी भी
पटक कर वृक्ष की ओर झपटा और उस पर चढ़ गया
इन भागने वालों को मादा अवश्य पकड़ लेती परन्तु

मादा चोट खाकर और भी क्रोधित हो
थी। उसकी आंखें आग के समान चमक रही
वह दांत किटकिटा रही थी। यह देख बिहारी
हिम्मत और भी टूट गई। वह डर के मारे
लगा। मादा अब बिलकुल पास आगई थी
चाहती थी कि बिहारी पर चोट करे कि अहेरी ने
फिर एक बाण छोड़ा। अब की बार बाण मादा के
घुस गया। वह कराहती हुई वृक्ष पर से गिर पड़ी।
गिरने से शाखा हिलने लगी। बिहारी घबड़ाया तो था
वह अपने को न सम्हाल सका। वह भी वृक्ष के नीचे
गिरा। इस समय भाग्य ने उसकी रक्षा की। वह
के ऊपर गिरा। इस कारण उसे चोट न आई। अहेरी
दौड़कर उसे उठाया। मादा मर चुकी थी। दोनों
घर की ओर चले। वे लोग गांव से बहुतेरे साथी
मशाल लेकर आए और अपना शिकार उठा ले गए।

कठिन शब्द –

मायाल मादा परिणाम

मादा चोट खाकर और भी क्रोधित हो[गई]
थी। उसकी आँखें आग के समान चमक रही [थीं]
वह दाँत किटकिटा रही थी। यह देख शिकारी
हिम्मत और भी टूट गई। वह डर के मारे क[ाँपने]
लगा। मादा अब बिलकुल पास आगई थी।
चाहती थी कि शिकारी पर चोट करे कि अहेरी ने ती[सरा]
फिर एक बाण छोड़ा। अब की बार बाण मादा के पे[ट में]
घुस गया। वह कराहती हुई वृक्ष पर से गिर पड़ी।
गिरने से शाखा हिलने लगी। शिकारी घबड़ाया तो था
वह अपने को न सम्हाल सका। वह भी वृक्ष के नी[चे]
गिरा। इस समय भाग्य ने उसकी रक्षा की। वह
के ऊपर गिरा। इस कारण उसे चोट न आई। अ[हेरी ने]
दौड़कर उसे उठाया। मादा मर चुकी थी। दोनों
घर की ओर चले। वे लोग गाँव से बहुतेरे साथी
सामान लेकर आए और अपना शिकार उठा ले गए।

कठिन शब्द

[illegible] मादा परिणाम

एक समय में चन्द्रमा हमारी पृथ्वी का एक भाग था। पृथ्वी से ही टूट कर वह इतनी दूर जा पड़ा। तब से
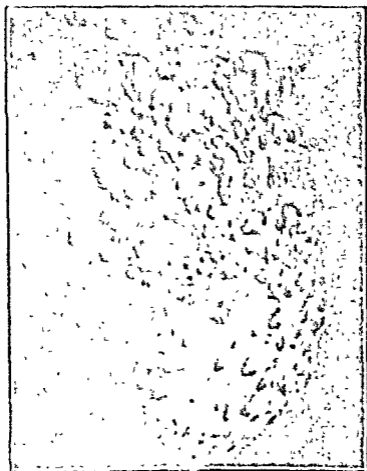
[illegible]

[illegible] और न मालूम

किस किसको देखा होगा। हमें भी वह उसी त
चुपचाप देख रहा है। कदाचित इसीलिये चन्द्रमा
देखकर हमें बड़ी शान्ति मिलती है।

आज-कल बड़े भारी भारी दूरबीन बन गए है
उनमें से देखने से ऐसा जान पड़ता है मानो
वायुयान में बैठकर चन्द्रमा के पास तक पहुँच गए हैं
इन्हीं दूरबीनों से आकाशविद्या जाननेवाले पंडि
ने जान लिया है कि चन्द्रमा में कंकड़ पत्थर छो
और कुछ नहीं है। न पेड़, न पौधे, न पानी, न वायु
ऊँचे ऊँचे पहाड़ हैं और गहरी गहरी घाटियाँ है
पहाड़ों की जो छाया घाटियों पर पड़ती है उसी
हम लोग बुढ़िया या चन्द्रमा का कलंक कहते हैं
यह बात ध्यान देने की है कि चन्द्रमा यद्यपि निर्जीव
तथापि उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हो रहा है
जैसा वह सहस्रों वर्ष पहले था वैसा ही अब भी
वायु और पानी से ही धरातल में परिवर्तन होता
जहाँ ये दोनों पदार्थ नहीं वहाँ परिवर्तन कैसा ?

ऊँचाई में चन्द्रमा के पहाड़ हिमालय से भी ऊँचे
और उसके समान गहरी घाटियाँ भी पृथ्वी पर नहीं
पर चन्द्रमा पृथ्वी से बहुत छोटा है। यदि पृथ्वी को क
काट कर कोई चन्द्रमा बनाना चाहे तो पचास चन्द्रमा

पाठ ३०

डिस्ट्रिक्ट कौंसिल

प्रजा के हित के प्रब- . . .
जनता पर छोड़ दिया है।
तथा कुछ सुभीते के प्रबन्ध स्थानीय चुने हुए लोग स्वयं कर लेते हैं। इस प्रकार की एक संस्था म्युनिसिपैल्टी है; तुम्हारी पुस्तक में एक पाठ उस पर भी है। म्युनिसिपैल्टी और डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के मेम्बरों के चुनाव प्रायः एक समान ही होते हैं, अर्थात भिन्न भिन्न महल्लों या गाँवों के रहनेवाले लोग वोट (सम्मति) देकर अपना मेम्बर या सदस्य चुन लेते हैं। कुछ सदस्य सरकार नियत करती है। थोड़े से सदस्य ये चुने हुए मेम्बर अपनी ओर से चुन लेते हैं। कुछ सरकारी अधिकारी अपने पद के कारण मेम्बर (सदस्य) हो जाते हैं, जैसे सिविल सर्जन, पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट और इंजीनियर अपने सरकारी पद के कारण इन स्थानीय सभाओं के सदस्य होते हैं। इस प्रकार, सदस्य होने के तीन रूप हैं—

(१) जनता या मेम्बरों द्वारा चुने जाकर।
(२) सरकार द्वारा नियत होकर।
(३) पद के कारण।

म्युनिसिपैल्टी का प्रबन्ध केवल एक शहर या बस्ती के लिये होता है जहाँ थोड़े से स्थान में अर्थात ४ या ५ मील के भीतर बहुत से (८ सहस्र से दो लाख तक) मनुष्य रहते हैं। डिस्ट्रिक्ट कौंसिल का प्रबन्ध जिले भर के लिये अर्थात ६० से २०० मील तक के लिये होता है। इनकी सीमा में जनसंख्या लगभग आठ से बीस लाख तक होती है।

डिस्ट्रिक्ट कौंसिल का प्रबन्ध दूर तक फैला रहता है। इसलिये वह अपने काम तथा अधिकारों को तहसीलों में बाँट देती है। प्रत्येक तहसील में उसकी अधीनता में एक स्थानीय सभा या लोकल बोर्ड होता है।

डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के खर्च को रुपया देने के लिये सरकार लगान के साथ प्रतिरुपये पर एक आना बढ़ाकर सत्रह आना ले लेती है। इस सत्रहवें आने से सरकार कौंसिल को रुपये देती है और यही इसकी आय का मुख्य द्वार है। इसके अतिरिक्त और कई छोटे छोटे द्वार ये हैं—

(१) घाटों, नालवें, [illegible]

[illegible] कर।

(२) [illegible]

(३) [illegible]

स्थानीय संस्थाओं (म्युनि०, डि० कौं०, लोकल बोर्ड आदि) का खर्च जनता के स्वास्थ्य-शिक्षा और सुभीते के लिये होता है। अपनी सीमा में स्वास्थ्य के लिये अस्पताल खोलना, औषधि बाँटना, पीने के जल के लिये तालाब, कुएं खुदवाना, उन्हें स्वच्छ रखना, बिगड़ जाने पर उन्हें सुधरवाना, शीतला के तथा प्लेग के टीके का प्रबन्ध करना, बाजारों में वस्तुओं की बिक्री पर स्वास्थ्य की दृष्टि से देख-रेख इत्यादि काम डिस्ट्रिक्ट कौंसिल किया करती है। शिक्षा के लिये शालाएं खोलना, पाठकों को वेतन देना, शालाभवन बनवाना आदि भी इन्हीं के अधीन हैं।

सुभीते के लिये सड़कें बनवाना और घाट तथा पुल बँधवाने का प्रबन्ध भी डिस्ट्रिक्ट कौंसिलों के हाथ में रहता है।

कठिन शब्द—

संस्था, सदस्य, लोकल बोर्ड ।

प्रश्न—

(१) डिस्ट्रिक्ट कौंसिल की आय और व्यय के विभाग कौन कौन हैं?

(२) डिस्ट्रिक्ट कौंसिल के सदस्यों का चुनाव कैसे होता है?

(३) जनता के स्वास्थ्य के लिये डिस्ट्रिक्ट कौंसिल क्या करती है?

—

पाठ ३७

बेटी की विदा

प्यारी बहिन सौंपती हूँ मैं अपना तुम्हें खजाना;
है इस पर अधिकार तुम्हारे बेटे का मनमाना।
रक्त, मांस, हड्डी, तन, मेरा—है यह बेटी प्यारी;
करो इसे स्वीकार, हुई यह अब सब भाँति तुम्हारी ॥१॥
पूजे कई देवता हमने तब इसको है पाया;
प्राण समान पालकर इसको इतना बड़ा बनाया।
आत्मा ही यह आज हमारी हमसे बिछुड़ रही है;
समझाती हूँ जी को तो भी धरता धीर नहीं है ॥२॥
बहिन ढिठाई माता की तुम मन में नेक न धरियो;
इस कोमल बिरवा की रक्षा बड़े चाव से करियो।
है यह नम्र मेमने से भी भीरु मृगी से बढ़ कर;
कड़ी बात या चितवन से यह कँप जाती है थर थर ॥३॥
है गँवार यह भोली भाली नहीं सिहुना जाने;
तिस पर भी गुरुजन की आज्ञा बड़े प्रेम से माने।
भावे दे तुम इसे [illegible] न यह [illegible];
बहिन, [illegible]
यह [illegible], यह [illegible]
हृदय थाम कर [illegible] आँखों में [illegible]

माता-नेह सोच तुम मन में दुख मेरा अनुमानो;
ममता छिपती नहीं छिपाये, बहिन, सत्य यह जानो ॥
इसका रूप निहार दिव्य मैं पल पल सुख पाती थी;
गान समान सुरीली बोली इसकी मन भाती थी।
बहिन तुम्हें भी ये सब बातें जान पड़ेंगी आगे;
अपने नैन रखोगी इस पर जब तुम नित अनुरागे ॥६॥

इसकी मन्द हँसी से मेरा मन अति सुख पाता था;
कठिन घाव भी जिससे दुख का अच्छा हो जाता था।
इसे उदास देख आँखों में भर आता था पानी;
छिपी नहीं है, बहिन, किसी से माता-प्रेम-कहानी ॥७॥

बड़ी लालसा भी निज मन की इसने नहीं बताई;
कर संकोच कठिन पीड़ा भी अपनी सदा छिपाई।
तो भी मैं सब लख लेती थी इसके बिना कहेही;
यों ही तुम इसकी सब बातें लखियो, बहिन सनेही ॥८॥

अपना मांस-पिंड देती हूँ मैं तन से कर न्यारा;
है यह जीवन मेरे जी का, आँखों का है तारा।
इस अनाथ बच्चे का पालन मातासम तुम कीजो;
मेरी इस बलहीन दशा में बहिन बाह गह लीजो ॥९॥

करो बहिन स्वीकार दया कर मेरी इतनी विनती;
बच्चों में अपने तुम करियो इस बच्चे की गिनती।

तो कपिलवस्तु, और दूसरे की श्रावस्ती थी। उस समय अयोध्या राजधानी न थी।

कपिलवस्तु बनारस से लगभग १०० मील उत्तर की ओर हिमालय की तराई में था। आज से अढ़ाई हजार वर्ष के कुछ ही पहले वहाँ शुद्धोदन का राज्य था। उनकी रानी महामाया थी। रानी के एक पुत्र हुआ जिसका नाम सिद्धार्थ रक्खा गया। यही सिद्धार्थ पीछे से संसार में गौतम बुद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

पढ़ने-लिखने में सिद्धार्थ अपने बचपन ही में बड़ा तीव्र बुद्धिवाला था। बाण चलाने और युद्ध करने की विद्या भी इसने सीखी थी। परंतु एकांत में बैठ कर विचार करने की आदत इसे लड़कपन से ही थी। दया और करुणा तो इसके स्वभाव में कूट-कूट कर भरी थी।

अठारह वर्ष की अवस्था में सिद्धार्थ का विवाह हुआ। राजा ने पुत्र का विचित्र स्वभाव देखकर भरसक इसे राजमहलों में ही रक्खा और संसार को देखने से बहुत बचाया। फिर भी सिद्धार्थ ने एक बूढ़े, रोगी और मृत मनुष्य को देखकर संसार के दुःखों पर विचार किया। तीस वर्ष की अवस्था में राजकुमार के एक पुत्र भी हुआ जिसका नाम राहुल रक्खा गया। एक दिन सिद्धार्थ नगर में घूमने निकला। वहाँ उसने एक साधु को देखा।
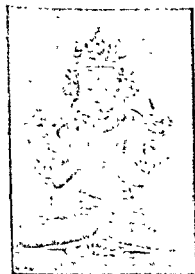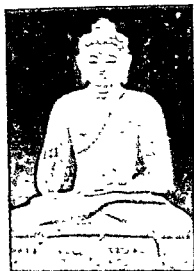
वह शांत और प्रसन्न-मन था। उसे देखने से ऐसा होता था कि मानों उसे किसी और बात की चिंता है। उसकी ऐसी दशा देखकर सिद्धार्थ के मन में वैराग्य का उदय हो गया।

एक रात को, जब सब सो रहे थे, राजकुमार : चाप महल से निकल पड़ा। संन्यासी के कपड़े पहिन इधर-उधर पर्यटन करने लगा। प्रथम कुछ दिन तक प में पंडितों से धर्मशिक्षा लेता रहा। पीछे गया के वन तपस्या करने लगा। परंतु जब उसके मन को तप संतोष न हुआ तब उसने सोचा कि तपस्या करके श को पीड़ा देने से कोई लाभ नहीं। एक दिन सोचते-विचा उसके चित्त में यह भाव आया कि शुद्ध जीवन बिता और सब जीवों पर दया करना ही जीव को दुःख छुटकारा दे सकता है। मनुष्य को जितने दुःख होते सबका मुख्य कारण उसकी इच्छाएँ ही हैं। दुःख से बच चाहे तो मनुष्य इच्छाओं को दबाए। इन विचारों सिद्धार्थ की आँखें खुल गईं। उसी दिन से वह संस में 'बुद्ध' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

अब उसने अपने नए मत का प्रचार करना आरं कर दिया। उस समय तक ब्राह्मण संस्कृत-भाषा में ऐस उपदेश करते थे जो साधारण लोगों की समझ में न आते

था। बुद्ध उस समय की बोलचाल की भाषा में उपदेश देने लगे। उनकी शिक्षा छोटे-बड़े सभी समझते और बहुत मन लगा कर सुनते थे। थोड़े ही दिनों में उनके बहुत से चेले हो गए।

तीस वर्ष बीतने पर बुद्ध एक बार अपने पिता की राजधानी में आए। उस समय वे साधु के वेष में थे। उनके बूढ़े पिता शुद्धोदन और बुद्ध की स्त्री तथा पुत्र ने भी उनके प्रभाव से बौद्ध-धर्म की दीक्षा ले ली।

प्रथम तो उत्तरी भारत में घूम-घूम कर बुद्ध ने स्वयं अपने धर्म का प्रचार किया। फिर भिक्षुकों का अर्थात् बौद्ध-संन्यासियों का एक संघ बनाया। उसके नियम निश्चित किए। मठों में रहने और साधना करने के ढंग निकाले। बौद्ध-मठों को "विहार" कहते थे। इनमें सदाचारी स्त्री और पुरुष दोनों ही रहते थे। विहारों के अधिक होने से ही सारे प्रान्त का नाम "विहार" पड़ गया है।

धर्म-शिक्षा देते घूमते घामते, अस्सी वर्ष की अवस्था में कुशीनगर में अपने जन्म-स्थान के पास ही, अपनी शिष्य मंडली से बातचीत करते करते गौतम बुद्ध परलोक सिधारे।

कठिन शब्द—

पर्यटन, शाखाएँ, तराई, वैराग्य, संन्यासी, शुद्ध, भिक्षुक साधना।

प्रश्न—

(१) विहार का नाम विहार क्यों पड़ा ?

(२) अर्थ लिखते हुए अपने वाक्यों में प्रयोग करो—

कूट कूट कर भरी थी, सुहाया दे सकना, आंखें खुलना, द्वार खोलना।

(३) बुद्ध क्यों विरक्त हुए, और उन्होंने अपना क्या मत निश्चित किया ?

(४) इनसे क्या समझते हो—

भिक्षु, विहार, मठ, मोक्ष, गया।

पाठ ३३

नन्दिनी

(१)

महाराज दिलीप अयोध्या के नरेश थे। उन
रानी का नाम सुदक्षिणा था। एक बार प
की इच्छा से दोनों अपने गुरु वशिष्ठजी
आश्रम को गए। वशिष्ठजी ने उन्हें बतलाया कि कामधे

है आप के कारण राजा के पुत्र नहीं होता। इन्होंने एक उपाय बतलाया। वशिष्ठजी की गाय का नाम नन्दिनी था। वह कामधेनु की बेटी थी। उन्होंने राजा से कहा कि तुम नन्दिनी की सेवा किया करो। प्रसन्न होने पर नन्दिनी तुम्हारी इच्छा पूरी कर देगी। राजा ने अपने गुरु की बात मान ली। उस दिन से राजा रानी आश्रम में ही रहने लगे।

दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही राजा उठ बैठे। नन्दिनी ने अपने बछड़े को दूध पिलाया। फिर राजा ने बछड़े को अलग बाँधकर यज्ञ के लिये दूध दुहा। इसके बाद सुदक्षिणा ने नन्दिनी की पूजा की और राजा ने उसको, वन में जाकर चरने के लिये, खूँटे से खोल दिया।

वन में, गाय जहाँ मन में आया वहाँ बे-रोक-टोक चरने लगी। राजा उसको अच्छी अच्छी घास खिलाते। उसका बदन सुहलाते और उसके ऊपर बैठी हुई मक्खियों को उड़ाते। संध्या के समय कामधेनु वशिष्ठ के आश्रम की ओर लौटी। राजा भी धीरे धीरे उसके पीछे चलने लगे।

जिस समय नन्दिनी आश्रम के पास पहुँची उस समय राजा ने आगे बढ़कर उसका स्वागत किया। वैसे तो वह रंभाकर बछड़े के पास दौड़ जाता था, पर आज वह

सुदक्षिणा के पीछे पीछे चलने लगी। आश्रम में पहुँच
जब सुदक्षिणा ने फिर से उसकी पूजा कर ली, तब व
अपने बछड़े के पास गई। इस शुभ लक्षण को देख
राजा और रानी मन ही मन प्रसन्न हुए। उन्हें आशा ह
कि एक न एक दिन, नन्दिनी उनकी सेवा को प्रसन्
ही स्वीकार करेगी।

नन्दिनी की पूजा के पश्चात राजा ने उसे
बँधने के स्थान में दीपक जलाया और खाने के लिये
उसके सामने अच्छी अच्छी घास डाल दी। जब व
सोने लगी तो राजा भी विश्राम के लिये उठे।

(२)

इस तरह राजा रानी को नन्दिनी की सेवा क
करते पूरे इक्कीस दिन बीत गए। बाईसवें दिन, इस ब
की परीक्षा लेने के लिये कि राजा मेरी सेवा मन
हृदय से कर रहा है, या नहीं, नन्दिनी हिमालय की ए
गुफा की ओर चल दी। राजा भी उसके पीछे
लिये राजा का यह विश्वास था कि इस साक्षा
त् भगवान् पर वन का कोई जानवर आक्रमण नहीं क
सकेगा। [illegible] हिमालय की शोभा देखने लगे।
थोड़ी देर [illegible] गु[illegible] [illegible] चिल्लाने का शब्द

ाया। राजा एक-दम चौंक पड़े और झटपट गुफा
ी ओर बढ़े। देखते क्या हैं, कि एक सिंह गाय के
ूपर आक्रमण कर रहा है और गाय डर से कांप रही है।
ह देखकर राजा क्रोध से जल उठे। उन्होंने तरकस से
ाण निकालने के लिये हाथ बढ़ाया। उनका हाथ बाणों
ं लगे हुए परों से चिपक कर रह गया। आज पहले
हल राजा को लज्जा से इतना दुखित होना पड़ा जितना
ौर कभी न होना पड़ा था। यह पहला अवसर था जब
न्होंने अपराधी को दण्ड देने में अपने को असमर्थ
ाया।

इतने में वह सिंह मनुष्य की वाणी में बोला—राजन!
ा चुका, बस करो। अब तुम्हारे किए कुछ न होगा।
ं शिव का सेवक हूँ और यहाँ इसलिये रक्खा गया
ूँ कि सामने दिखाई देनेवाले इस देवदार के वृक्ष की
दा रक्षा करता रहूँ।

यह सुनकर राजा का क्रोध कुछ शान्त हुआ। उन्हें
विदित हो गया कि स्वयं महादेव ने उन्हें असमर्थ बना
दिया है। इतने में सिंह ने फिर कहा—राजन! तुम लौट
जाओ। मैं बहुत भूखा हूँ, इस गाय को नहीं छोड़ूँगा।
ुम्हारा कोई अपराध नहीं [illegible] तुममें
इसके लिये अपयश न होगा

इस पर राजा ने सिंह से कहा—मैं कदापि आश्रम को नहीं लौट सकता। जो वस्तु रक्षा के लिए मुझे सौंपी गई है, उसकी रक्षा करना मेरा मुख्य कर्तव्य है। मैं क्षत्रिय हूँ। चाहे प्राण चले जायँ, पर मैं उसकी रक्षा से मुख नहीं मोड़ सकता। मेरी तुमसे एक प्रार्थना है। यदि तुमको अपनी भूख ही बुझाना है, तो तुम इस गाय के बदले मुझे खा लो; इसको मत मारो।

यह सुनकर सिंह मुसकराने लगा। उसने कहा—राजन! तुम भूल करते हो। यहाँ प्राणों की भेंट चढ़ानी व्यर्थ है। इस समय इस गाय की रक्षा करना तुम्हारे वश की बात नहीं है। यदि ईश्वर को इसकी रक्षा करनी होती तो वह कदापि इसे इस गुफा की ओर न आने देता। तुम सारी पृथ्वी के राजा हो। यदि तुम जीवित रहोगे तो करोड़ों नर-नारियों का उपकार कर सकोगे। यदि तुम्हें गुरु वशिष्ठ का भय हो तो तुम उनको अन्य गायें देकर प्रसन्न कर सकते हो। तुम्हारी मृत्यु से संसार की बड़ी हानि होगी। इसलिये तुम इस विचार को छोड़ दो और आश्रम को लौट जाओ।

राजा ने फिर सिंह से कहा—क्षत्रियों के लिये यश और कर्तव्य सबसे बड़ी वस्तु है। इसलिये मैं तुमसे यही

विनय करता हूँ कि तुम इस गाय को छोड़ दो और
उसके बदले मुझे खा लो।

(३)

जब सिंह ने देखा कि राजा किसी प्रकार न माने
तब उसने कहा अच्छा, आगे बढ़ो। सिंह के मुँह
यह बात निकलते ही राजा का चिपका हुआ हाथ
गया। राजा ने बड़ी प्रसन्नता से धनुष-बाण एक
फेंक दिया और आगे बढ़कर बैठ गए जिससे
उनको खा जाय। वे इसी आशा में बैठे थे कि
उनके ऊपर झपटे पर देखते क्या हैं कि ऊपर से फूलों
वर्षा हो रही है और कोई उनसे कह रहा है—बेटा, उ
राजा को बड़ा अचम्भा हुआ। वे विस्मय से चारों
देखने लगे। न तो वहाँ सिंह था और न कोई प्राणी
केवल वही नन्दिनी वहाँ खड़ी थी। राजा को चकित देख
गाय ने कहा—राजन! वास्तव में यहाँ कोई सिंह नहीं
मैंने ही तुम्हारी परीक्षा लेने के लिये यह सब खेल रचा
अब मुझे निश्चय हो गया कि तुम अपने गुरु के सच्चे
हो और मुझमें तुम्हारा अटल श्रद्धा है। मैं तुमसे
प्रसन्न [illegible] [illegible] वांछित हो पाओगे। मैं प्रसन्न
दूँगी [illegible] [illegible] [illegible] कामधेनु की पुत्री

प्रश्न—

(१) महाराज दिलीप वशिष्ठ के आश्रम में क्यों पधारे ?
(२) राजा का हाथ बाणों के पर में क्यों चिपक गया ?
(३) सिंह ने राजा को क्या समझा कर लौटाना चाहा ?
(४) राजा ने क्या उत्तर दिया ?

—

पाठ ३४

जन्म-भूमि

जन्म दिया माता सा जिसने, किया सदा लालन पालन।
जिसके मिट्टी जल से ही है, रचा गया हम सबका तन॥
गिरिवरगण रक्षा करते हैं, उच्च उठा के शृङ्ग महान।
जिसके लता द्रुमादिक करते, हमको अपनी छाया दान॥
माता केवल बाल काल में, सुखद गोद में धरती है।
जब तक हम अशक्त रहते हैं तब तक पालन करती है॥
मातृ-भूमि करती है पालन सदा मृत्यु पर्यन्त।
उसके दया-प्रवाह का तो होता कहीं नहीं है अन्त॥
मर जाने पर कण शरीर के, इसमें ही मिल जाते हैं।
हिन्दू दाह, यवन-ईसाई दफन इसी में पाते हैं॥

ऐसी मातृ-भूमि मेरी है, स्वर्गलोक से भी प्यारी।
जिसके पद-कमलों पर मेरा तन-मन-धन सब बलिहारी ॥

कठिन शब्द—

लालन पालन, शृङ्ग, द्रुम, पर्यन्त, दया-प्रवाहों, दाह, दफन ।

प्रश्न—

(१) हमारा शरीर किससे रचा गया है ?

(२) मर जाने पर हम किसमें मिल जाते हैं ?

(३) इस कविता में तन-मन-धन किस पर न्योछावर किया गया है ?

पाठ ३५

हमीर का हठ

भारतवर्ष के [illegible] में एक [illegible] का नाम बहुत प्रसिद्ध है। उसके [illegible] नाम का एक [illegible] था। [illegible] उसने कुछ अपराध [illegible] बादशाह [illegible]

भड़क उठा। उसने आज्ञा दी—मैहमाशाह को तुरन्त शू
पर चढ़ा दो।

मैहमाशाह जान लेकर भागा, और रणथम्भोर
किले में पहुँचा। यह किला राजपूताने में है और ब
मजबूती से बनाया गया है। उस पर चाहे जैसा बलव
दुश्मन क्यों न हमला करे, उसे आसानी से नहीं जी
सकता। उन दिनों इस किले का स्वामी हमीर राव नाम
एक राजपूत राजा था। वह बड़ा ही बहादुर था, य
तक कि वह मृत्यु से भी लड़ने को तैयार रहता था
मैहमाशाह ने उसे अपना हाल सुनाया, और कहा—अ
तो मैं आपकी शरण में हूँ, आप चाहे मुझे मारें, चा
बचाएँ।

मैहमाशाह की बातें सुनकर हमीर ने उसे जवा
दिया—मीर साहब, जब तक आपका जी चाहे, आप मे
पास आनन्द से रहें। जब तक आप मेरे पास रहेंगे त
तक कोई आपका कुछ न बिगाड़ सकेगा।

मैहमाशाह के भाग जाने से अलाउद्दीन यों ही क्रोधि
था। जब उसने सुना कि हमीर ने मेरे अपराधी को अप
पास रख लिया है, तब तो मारे क्रोध के वह जल उठा।
उसने तुरन्त हमीर के पास एक दूत भेजा। दूत ने हमीर
से कहा—महाराज, आप बादशाह के अपराधी को अपने

पास रख लिया, यह बहुत बुरा किया। इसका फल अच्छा न होगा।

हमीर ने मुसकरा कर दूत को उत्तर दिया—मैंने जो कुछ किया है, उसके लिये मुझे कोई चिन्ता नहीं है। जब मैंने मेहमाशाह को शरण दी है, तब आप यह आशा न करें कि बादशाह उसे मुझसे पा सकेंगे। यदि मेहमाशाह की रक्षा करने में मुझे अपना और अपने सब राजपूत सिपाहियों का भी बलिदान करना पड़ेगा, तो भी कोई चिन्ता की बात नहीं। आप जाकर अपने बादशाह से कह दीजिए कि अब वह मेहमाशाह को पाने की आशा छोड़ दें।

दूत के मुँह से हमीर की बातें सुनकर बादशाह के क्रोध की सीमा न रही। वह तुरन्त एक बहुत बड़ी फौज लेकर दिल्ली से रणथम्भोर की ओर चल पड़ा। थोड़े ही दिनों में वह टिड्डी-दल रणथम्भोर पहुँच गया और उसने चारों ओर से किले को घेर लिया। कहते हैं कि बादशाही फौज लगभग दस मील तक फैली हुई थी। रणथम्भोर पहुँचकर बादशाह ने एक बार फिर हमीर से अपना अपराधी को माँगा। उसने सोचा था कि मेरा इतना बल देखकर हमीर डर जायगा और मेहमाशाह को लेकर मेरे पास दौड़ा आयगा। पर हमीर की छाती लोहे की थी। बादशाह

वह लम्बी-चौड़ी फौज देखकर हमीर तनिक भी भयभीत न हुआ। उसने दूत को जवाब दिया—एक बार कह चुका हूँ कि मैहमाशाह बादशाह को नहीं मिल सकता। बादशाह के मन में जो आए सो करें।

अब बादशाही फौजें किले की ओर बढ़ीं। हमीर बराबर बादशाह से लड़ता रहा। धीरे-धीरे हमीर के पास बहुत कम सिपाही बच रहे। इतना ही नहीं, किले में खाने-पीने का जो सामान था वह भी चुक गया।

अब हमीर को बड़ी चिन्ता हुई। उसने सब राजपूतों को बुलाया और उनसे कहा—मेरे बहादुरो! किले में खाने-पीने का जितना सामान था, वह सब चुक गया। अब तुम लोगों की क्या राय है? सब बहादुरों ने जवाब दिया—महाराज, हम लोग राजपूत हैं। भीरु लोग भूखों मरना स्वीकार नहीं कर सकते। वे तो रण-भूमि में रक्त की होली खेल कर मरते हैं। अब तो बस, एक ही उपाय है। कल सब राजपूत-देवियाँ चिता सजाकर जौहर करेंगी और हम लोग किले से बाहर निकल कर शत्रु पर टूट पड़ेंगे। हमीर आनन्द में पागल होकर बोले—शाबाश, बहादुरो! मुझे तुमसे ऐसी ही आशा थी।

[illegible] उसने कहा—
[illegible] कष्ट आया है।

और अपना सर्वनाश न कीजिए, मुझे बादशाह के हवाले कर दीजिए और उससे संधि कर लीजिए। हमीर ने त्योरी बदल कर महमाशाह को जवाब दिया—मीर साहब, अब कभी मेरे सामने ऐसी बात न कहना। मैं राजपूत हूं। मैंने तुम्हें शरण दी है। मेरे रहते बादशाह तुम्हें नहीं पा सकता।

दूसरे दिन किले में एक बहुत बड़ी चिता बनाई गई। उस पर घी, राल आदि जलनेवाले पदार्थ डाले गए। फिर हमीर की रानी ने उसमें आग लगा दी। चिता धू-धू करके जल उठी। उसकी भयङ्कर लपटें आकाश को छूने लगीं। हमीर की रानी आगे थीं, और उनके पीछे दूसरी राजपूत-देवियां खड़ी हुई थीं। पहले हमीर की रानी ने चिता में प्रवेश किया। इसके बाद एक-एक करके सब राजपूत-देवियां चिता में कूद गईं।

राजपूत लोग पत्थर की छाती करके वह भयङ्कर दृश्य देखते रहे। जब एक भी देवी चिता के बाहर न रही, तब हमीर पागल की नाईं बोला—सब समाप्त हो गया। अब चलो, हम भी युद्ध की आग में कूद पड़ें और समाप्त हो जाएं।

सब लोग ने [illegible] पहने, माथे पर केसर के तिलक लगाए, और [illegible] होकर सब आपस

में गले मिले। इसके बाद किले का फाटक खोल दिया गया। राजपूत लोग मृत्यु से मिलने के लिए पागलों की नाईं झूमते हुए आगे बढ़े और शत्रु पर टूट पड़े। आज राजपूत अन्तिम युद्ध करने आए थे। वे केवल मरने की इच्छा लेकर ही मैदान में आए थे। वे अपने आपको बिलकुल भूल कर बादशाही फौज को मथने लगे। वे तब तक लड़ते रहे जब तक वे सबके सब मर नहीं गए।

इस प्रकार वीर हमीर ने, शरण में आए हुए उस मनुष्य की रक्षा करने के लिए, अपने सब सिपाहियों का, अपने सब राज्य का, अपने प्यारे परिवार का और अन्त में अपना भी बलिदान कर दिया। हमीर का जीवन धन्य था। भारत के इतिहास में हमीर सदा अमर रहेगा।

कठिन शब्द—

गूलरी, शरण, बलिदान, सीमा, टिड्डीदल, चिता, जौहर, सर्वनाश, हवाले, संधि, अन्तिम, मथने।

प्रश्न

[illegible] नहीं कर दिया?

[illegible] दिया?

पाठ ३६

गोशाला

(१)

जबलपुर में एक वृद्ध सज्जन रहते थे। उनका नाम गंगाप्रसाद अग्निहोत्री था। अभी थोड़े ही दिन हुए उनका स्वर्गवास हुआ है। वे गो-सेवा के बड़े पक्षपाती थे। उन महाशय ने इस विषय पर देश और परदेश की गोपालन-विधि का अध्ययन किया था। उन्होंने एक सभा में इस विषय पर व्याख्यान दिया था। उसका भाव यह था :—

हम सब आरोग्य और प्रसन्न रहना चाहते हैं। आरोग्य रहने के लिये हमें हृष्ट-पुष्ट रहना चाहिए। हृष्ट-पुष्ट शरीर पर रोग आक्रमण नहीं कर पाते। हृष्ट-पुष्ट रहने के लिये हमें अच्छा घर, अच्छा भोजन और दूध घी चाहिए। हमारी मिठाइयों में खोवा, घी पड़ता है। हम दही, मही, रबड़ी, मलाई खाते हैं। ये पदार्थ हमें कहाँ से प्राप्त होते हैं? दूध, दही, मलाई, रबड़ी, खोवा, घी, हमें गाय के दूध से प्राप्त होते हैं। हमारी मिठाई में शक्कर पड़ती है। वह शक्कर ईख या गन्ने से प्राप्त होती है। गन्ने खेत में होते हैं। खेत में हल चलाने के लिये, खेतों को सींचने के लिये और कुए से पानी निकालने के लिये हम बैलों अर्थात गो-वंश को

सहायता लेनी पड़ती है। हमारे भोजन के अन्न भी खे
से प्राप्त होते हैं। वहाँ भी हल चलाने और खेत स
के लिये उसी गो-वंश के बैलों की आवश्यकता पड़ती
हमें अपना शरीर ढाँकने के लिये वस्त्र की आवश्यकता
है। वस्त्र का सूत रुई से बनता है। रुई हमें खेत से प्राप्त
है। इसमें भी हमें गो-वंश की सहायता आवश्यक होती

हमारा भोजन या अन्न पकाया जाता है। उ
लिये गोबर के कण्डे ईंधन का काम देते हैं। हमारा घ
से लीपा घर स्वच्छ और सुथरा रहता है। गोबर
सूख जाता है और सूखने पर किसी प्रकार की दुर्गन्ध
आती। हमारे पहिनने के जूते और कुएँ से पानी खी
के मोट भी गाय के चर्म से बनते हैं।

इस प्रकार ध्यान करने से जान पड़ता है कि हम ल
गो-वंश की ही सहायता से हृष्ट-पुष्ट, आरोग्य और सु
हैं। यदि उनकी सहायता न हो तो यहाँ के इलके
[illegible] के भाग तथा [illegible] करनेवाले देश में काम चलना कठि
हो [illegible] वंश की सहायता ने [illegible]
[illegible] कितना कि वह अभी [illegible]

[illegible] हैं उसे [illegible]
[illegible] आदि और [illegible]

रखते हैं। जिस गो-वंश से हमें इतनी सहायता मिलती है उसके लिये हम क्या करते हैं ? जब वह चरकर लौटती है तब किसी गन्दे और सीड़वाले घर में बाँध देते हैं। वहाँ उसका मूत्र, गोबर सड़ता है; मच्छड़-डाँस फैले रहते हैं; भूमि भी गीली तथा ऊबड़-खाबड़ रहती है। उसके खाने के लिये हम सूखा पयाल, भूसा या थोड़ी सी कड़बी डाल देते हैं। उसे रात में प्यास लगती होगी, मच्छड़-डाँस काटते होंगे, गीली भूमि अप्रिय लगती होगी, इस पर कभी हम ध्यान नहीं देते।

उसे हम खली, कराई (दाल की भूसी), तभी तक देते हैं जब तक वह दूध देती रहती है। इसका प्रयोजन यही रहता है कि वह दूध अधिक दे। यह भोजन में रुचि बढ़ाने या स्वाद के लिये उसे नहीं दी जाती। क्या यह उचित है ? क्या हम गाय, बैल को कभी नमक या बिनौला देते हैं ? क्या उनकी शरीर-रक्षा तथा स्वास्थ्य के लिये भोजन के साथ नमक की आवश्यकता न होती होगी ?

श्रीकृष्णचन्द्र हमारे भगवान के अवतार थे। उन्होंने गोपालों के साथ रह कर, गोपाल कहा कर, हम लोगों को गोपालन की शिक्षा दी है। भगवान होते हुए भी गोपाल कहाने म[illegible] लज्जा नहीं लगी। उन्होंने गोवर्धन गिरि की पूजा कराई, [illegible] इसलिये नहीं कि गोवर्धन गिरि

से अच्छी अच्छी घास और स्वादिष्ट भोजन गायों को मिला करती थी। अब गोवर्धन की पूजा तो दूर रही ग्रामों की गोचर-भूमि भी छीन कर जोत ली जाती है।

न तो हम भगवान की शिक्षा मानते हैं और न यह सोचते हैं कि गो-वंश के ह्रास से हमें क्या हानि पहुँचेगी। क्या हमारी यह उदासीनता अपने पैर में कुल्हाड़ी मारने के समान हानि पहुँचानेवाली न होगी।

(३)

यूरोपियन और अमरीकन जातियाँ गो-वंश को हमारे समान, देवतातुल्य नहीं मानतीं। वे केवल उसकी उपयोगिता पर ध्यान देती हैं अर्थात उन्हें दूध और दूध से लभ्य पदार्थों के लिये पालती हैं। परन्तु उनकी गो-वंश की सेवा आदर्श सेवा है। उनकी गो-शालाएँ, जिन्हें वे डेयरी कहते हैं, जाकर देखिए तब विदित होगा और आश्चर्य होगा कि वे गो-वंश के सुख-दुख का कितना ध्यान रखते हैं।

[illegible] रहता है। हाल के [illegible] जाति हो बढ़कर [illegible] हो रहता है।

जेवर करने हो तुरन्त हटा दिया जाता है। उनका चरना और गन्दे होने का स्थान नित्य धोई जाती है। उनके रहने की जगहों में तार की जाली लगी रहती है ताकि मच्छड़ मक्खी वहां न आ पावें। वहां सांड भी नहीं रहता। उन्हें भोजन वही दिया जाता है जो कि उन्हें रुचे; जिससे वे पुष्ट हों और दूध अधिक दें। भोजन और जल नियत समयों पर कई बार दिया जाता है। नमक के ढोके रख दिये जाते हैं ताकि वे इच्छानुसार नमक चाट सकें। गायों के बच्चों को भी वे सुख से रखते हैं। भोजन भी अच्छा देते हैं ताकि वे अभी से पुष्ट हो समय आने पर खूब दूध दें। डेयरी की प्रत्येक गाय प्रतिदिन ६ सेर से कम दूध नहीं देती। कोई कोई दुधार धेनु तो एक जून में १६ सेर तक दूध देती है। यदि ठीक भोजन दिया जाए और सुख से रक्खी जाए, तो गायें क्यों न मनमाना दूध दें। सारांश यह है कि डेयरी में सब प्रकार से गो-वंश को सुखी बनाने की चेष्टा की जाती है जिससे दूध अधिक और अच्छा मिले। दूध स्वच्छ बरतनों में दुहा जाता है और स्वच्छ बोतलों में भर कर तुरन्त घर घर पहुँचा दिया जाता है।

खेती का काम करनेवाले बैल भी इसी प्रकार से सुखी होकर मनुष्य स्वयं लाभ ले उनसे कम आहार लाभ हो सकता है।

कठिन शब्द—

गोशाला, गोपालन-विधि, अध्ययन, अप्रिय
स्वास्थ्य, उदासीनता, लाभ्य, हृष्टपुष्ट, डेयरी

प्रश्न—

(१) गौ से हमें क्या क्या लाभ होते हैं?
(२) भैंस से हमें क्या क्या लाभ होते हैं?
(३) डेयरी में गायें कैसे रक्खी जाती हैं?

पाठ २७

सीता-हरण

तेहि बन निकट दसानन गयऊ।
तब मारीच कपट मृग भयऊ॥
अति बिचित्र कछु बरनि न जाई।
कनक देह मनि रचित बनाई॥
सीता परम रुचिर मृग देखा।
अंग अंग सुमनोहर बेषा॥
सुनहु देव रघुबीर कृपाला।
एहि मृग कर अति सुंदर छाला॥

लछिमन कै प्रथमहि लै नामा।
पाछे सुमिरेसि मन महुँ रामा॥
प्रान तजत प्रगटेसि निजु देहा।
सुमिरेसि रामु समेत सनेहा॥
अंतर प्रेमु तासु पहिचाना।
मुनि दुर्लभ गति दीन्हि सुजाना॥

दोहा—बिपुल सुमन सुर बरषहिं गावहिं प्रभु-गुन-गा
निजपद दीन्ह असुर कहँ दीनबन्धु रघुना

खल बधि तुरत फिरे रघुबीरा।
सोह चाप कर कटि तूणीरा॥
आरत-गिरा सुनी जब सीता।
कह लछिमन सन परम सभीता॥
जाहु बेगि संकट अति भ्राता।
लछिमन बिहँसि कहा सुनु माता॥
भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई।
सपनेहुँ संकट परइ कि सोई॥
मरम बचन जब सीता बोला।
हरि प्रेरित लछिमन मन डोला॥
बन दिसि देव सौंपि सब काहू।
चले जहाँ रावन ससि राहू॥

दोह—क्रोधवंत तब रावनु लीन्हेंसि रथ बैठाय।
चला गगन पथ आतुर भय रथ हाँकि न जाय॥

कठिन शब्द—

दशानन, मारीच, कनक, मनिरचित, रुचि सत्य-संध, परिकर, विपिन, निसिचर, विवे सरासनु, निगमनेति, दुरत, भूरी, विपुल, सुम तूणीर, नाद, आरत–गिरा, भृकुटिविलास, रावण-शशि-राहू, वन-दिसि-देव, जती, स्वा वधुहि, क्षुद्र मग्र।

प्रश्न—

(१) रामचन्द्रजी मृग को मारने क्यों गए ?
(२) इसका भाव क्या है—'उठे हरषि सुरकाज सँवारन'।
(३) मारीच ने लक्ष्मण का नाम क्यों लिया ?

पाठ ७८

अशोक

अशोकवर्द्धन, सम्राट चन्द्रगुप्त का पोता था। अशो पिता के देहान्त के समय वह उज्जैन-प्रान्त का वाइसरा अर्थात राज्य-प्रतिनिधि था। वह ईसवी सन से २७

ई० पूर्व राज-सिंहासन पर बैठा। इसके पश्चात आठ वर्ष तक वह अपना समय शिकार आदि मनोरंजक बातों में ही व्यतीत करता रहा। नवें साल में उसने कलिंग-राज्य पर चढ़ाई की। हिन्दुस्तान के जिस प्रान्त को अब उड़ीसा सरकार कहते हैं और जो बंगाल की खाड़ी के किनारे है, वहीं उस समय कलिंग-राज्य कहलाता था। चन्द्रगुप्त का अधिकार बंगाल देश पर तो हो गया था, परन्तु कलिंग-राज्य स्वतंत्र था। अशोक ने उस पर भी अपना अधिकार कर लिया। युद्ध में कलिंग-देशवालों की हार हुई और अशोक की जीत।

इस युद्ध में कोई डेढ़ लाख मनुष्य कैद किए गए, एक लाख मारे गए, और इससे भी अधिक मनुष्य युद्ध से उत्पन्न होनेवाली आपत्तियों और दुःखों से नष्ट हुए। इन घायलों की दशा को देखकर अशोक के हृदय में बड़ी दया उत्पन्न हुई। परिणाम यह हुआ कि अशोक ने बौद्धमत की दीक्षा ले ली। इसके पश्चात उसने दूसरों से युद्ध करके उनको जीतना छोड़ दिया और वह धर्मोपदेशों के द्वारा मनुष्यों के मनों पर अपने प्रभावों के डालने की चेष्टा करने लगा। अपना सारा समय उसने बौद्ध-धर्म के ही प्रचार में लगा दिया और अन्त में राज्य छोड़कर बौद्ध साधु बन बैठा।

उसने अपने राज्य में, स्थान स्थान पर धर्मसम्बन्धी आदेश लिखवा दिए। आदेश चट्टानों तथा पत्थर के खम्भों पर खुदवा दिए गए थे। उनमें से कितने ही आदेश तो अभी तक वैसे ही खुदे हुए मिलते हैं। उड़ीसा मैसोर, पंजाब, बम्बई और दूसरे प्रान्तों में भी उसके आदेश मिले हैं। इससे प्रसिद्ध है कि इस सम्राट का राज्य पूरे भारतवर्ष पर था। केवल दक्षिणी भारत का ही एक छोटा सा भाग उसके बाहर रह गया था।

शिकार खेलना, यज्ञों में पशुओं का मारना, एवं अन्य प्रकार से जीव-हिंसा करना, ये सब बातें राज्य भर में बन्द करा दी गईं। यह देखने के कि उसकी आज्ञाओं का कैसा पालन होता है, उसने कितने ही गुप्तचर नियत कर दिए। सूबे के कर्मचारियों को आज्ञा दे दी गई कि वे मनुष्यों को धर्म का उपदेश करें। सड़कों के किनारे किनारे बरगद, आम आदि के वृक्ष लगवा दिए गए। कितने ही कुएँ बनवा दिए गए और बावलियाँ भी खुदवा दी गईं। स्थान स्थान पर यात्रियों के लिए धर्मशालाएँ और प्यासों के लिये पौसरे भी बनवाए गए। दीन-दुखियों और रोगियों के लिये औषधालय खोले गए। उनमें सब प्रकार की औषधियाँ सबको बिना मूल्य मिलती थीं।

यद्यपि अशोक स्वयं बौद्ध हो गया था तथापि वह अन्य सभी धर्मों को बड़े आदर की दृष्टि से देखता था। उसकी आज्ञा थी कि कोई भी व्यक्ति किसी भी धर्म की कभी, कहीं, निन्दा न करे। उसके राज्य में प्रत्येक मनुष्य निडर होकर अपने धर्म का पालन कर सकता था। बौद्ध-धर्म फैलाने के लिये उसने अनेक देशों में उपदेशक भेजे थे। वे बड़ी बड़ी दूर पहुँच गए थे। सीरिया, मिस्र, यूनान, लंका अर्थात एशिया, अफ्रीका, योरप तीनों महाद्वीपों में वे पहुँच गए थे। जो उपदेशक-मंडली लंका गई थी उसका नेता, महाराज अशोक का पुत्र, महेन्द्र था। उसने दूर दूर तक मठ बनवा दिए थे। इस सम्राट ने धर्म के प्रचार करने में कोई प्रयत्न उठा न रक्खा। यह उसी के परिश्रम का फल था कि बौद्ध-धर्म संसार के अधिकांश देशों में फैल गया। उसने बौद्ध-धर्म की एक बड़ी सभा भी की।

सम्राट अशोक प्रतिवर्ष अपनी राजधानी, पाटलिपुत्र, में विद्वानों की एक सभा करता था और उनकी योग्यता के अनुसार उनको पारितोषिक देता था।

अशोक ने चालीस वर्ष तक राज्य किया। ईसवी सन से २३२ वर्ष पहले वह परलोक सिधारा। उससे अधिक प्रतापी, धार्मिक सम्राट कोई भी नहीं हुआ। न तो

कोई मुसलमान बादशाह अकबर बराबर हुआ और न इतना बड़ा राज्य ही किसी और बादशाह को प्राप्त हुआ।

अशोक के शिला-लेख पाली भाषा में हैं। उनमें से एक लेख जो मैसूर की रियासत में एक चट्टान पर खुदा हुआ मिला है, उसमें लिखा है :—

माता-पिता की आज्ञा का पालन करो। जीव-रक्षा में तत्पर रहो। सदैव सत्य बोलो। इन नियमों का पालन करना ही धर्म-मार्ग पर चलना है। शिष्य को गुरु की पूजा करनी चाहिए। सबको अपने पड़ोसियों के साथ प्रेमपूर्वक बर्ताव करना चाहिए।

महाराज अशोक के आदेश बड़े उदार हैं। उनके अनुसार चलने से सब लोग सदाचारी बन सकते हैं।

इस सम्बन्ध में यह भी लिखना आवश्यक है कि जो स्तम्भ महाराज अशोक ने बाईस सौ वर्ष पहले स्थापित किए थे वे आज भी बहुत से स्थानों में खड़े हैं। उन पर की गई कारीगरी उच्च श्रेणी की है और देखते ही बनती है।

कठिन शब्द—

राज्यप्रतिनिधि, मनोरंजक, प्रभाव, धर्मोपदेश, धर्मसंबंधी आदेश, जीव-हिंसा, कर्मचारी, गुप्तचर, मण्डली, शिलालेख, स्थापित, उदार

प्रश्न—

(१) अशोक ने बौद्ध-धर्म क्यों ग्रहण किया ?

(२) उसके मुख्य मुख्य आदेश क्या थे ?

पाठ ३८

तुलसीदास

दृश्य १

स्थान—[चित्रकूट, नदी से लगा हुआ मार्ग, एक पागल ब्राह्मण का प्रवेश]

ब्राह्मण—मैं निर्धन हूँ। तीन दिनों से भूखा मर रहा हूँ। कोई इतना भी नहीं पूछता कि इस ब्राह्मण को भोजन मिला या नहीं। अब तो नहीं सहा जाता। इस कष्ट और अपमान से तो मृत्यु ही अच्छी है।

[नदी के किनारे जाकर पागल ब्राह्मण मरने के विचार से उधर [illegible] है]

[तुलसीदास का प्रवेश]

तु० [इधर उधर देखकर] अहा, कैसा रमणीक स्थान है। इधर यह कौन आ रहा है? हां! यह ना

ना है कि गले में पत्थर बाँध रहा है? [पास देकर ब्राह्मण को पकड़ लेना]

ब्राह्मण—मुझे छोड़ दो, छोड़ दो, नहीं तो ठीक न होगा।

तु०—ब्राह्मण देवता! यह तुम्हें क्या सूझी है? ने हाल क्यों दे रहे हो? ऐसा करना घोर पाप है!

ब्रा०—परन्तु जिसको जीने में कोई सुख नहीं उसके लिये मरना कोई पाप नहीं है।

तु०—तुम क्यों प्राण देने पर उतारू हुए हो?

ब्रा०—तुम जाओ। तुम मेरा दुख नहीं मिटा सकते।

तु०—तो सुनकर दो आँसू तो बहा सकता हूँ।

ब्रा०—उससे लाभ?

तु०—लाभ हो या न हो। जब तक तुम मुझे अपना हाल न सुना दोगे तब तक मैं तुम्हें न छोड़ूँगा।

ब्रा०—(रोकर)

भूखे बच्चे बिलबिलाते दिन रात हैं,
नहीं पूछता ग्राम पड़ोसी बात है;
भीख नहीं मिलती है, और न काम है,
फिर हा! 'लाचार' विधाता वाम है?
रोता है ब्राह्मण, दुःख पाता महा,
अब यह संकट आके नहीं जाता सहा.

छोड़ो, छोड़ो ! मरने दो मुझको अभी,
मेरे मन को शान्ति मिल सकेगी तभी।

तु०—ठहरो ! इतनी भूल न करो; तुम ब्राह्मण होकर निर्धनता से घबड़ाकर प्राण दे रहे हो !

ब्रा०—यह सीख बहुत भली है, पर जिसके पास खाने को भोजन और पहिनने को वस्त्र हो उसके लिये।

तु०—[आप ही आप] ब्राह्मण बिना धन के न मानेगा [ब्रा० से] देखो, सुखीजनों से दुखीजन भगवान को अधिक प्यारे हैं।

ब्रा०—हाँ, सच है; किन्तु मेरे पीछे तो गृहस्थी लगी है। क्या आप जानते नहीं कि 'भूखे भजन न हो गुपाला'।

तु०—अच्छा, तुम कितना धन चाहते हो ?

ब्रा०—जितने में हम सब सुख से जीवन बिता सकें और पड़ोसी लोग हमारी हँसी न उड़ा सकें।

तु०—चार आने प्रतिदिन ?

ब्रा० हाँ, कम से कम।

तु०—अच्छा चार आने प्रतिदिन हम तुम्हें दें पर तुम यह प्रतिज्ञा करो कि तुम हमारा काम सचाई से करोगे।

ग्रा०—कौन काम ?

तु०—दिन रात भगवान रामचन्द्र का ध्यान करना।

ग्रा०—हाँ, करूँगा; यह क्या कठिन है !

तु०—[हँसकर] यही तो सबसे कठिन है—

दुख में सुमिरन सब करैं, सुख में करै न कोय,
जो सुख में सुमिरन करै, दुख काहे को होय।

[झोली में से एक डिबिया निकालकर देते हुए]

लो देखना, दिन भर भजन कर चुकने के बाद साँझ को इसमें से एक चवन्नी ले लिया करना। बीच में कभी इसे न खोलना, और इसका भेद भी किसी से न कहना, नहीं तो फिर कुछ न मिलेगा।

ग्रा०—[हाथ जोड़कर] महाराज, सचमुच आप कोई बड़े भारी महात्मा हैं, जो आपने ऐसे संकट में मेरी रक्षा की।

तु०—ऐसी प्रार्थना उस परमात्मा से करो जो संकट में रक्षा करता है।

ग्रा०—बहुत अच्छा महाराज। [प्रणाम करके जाता है]

दृश्य [illegible]

[illegible]

तु०—ओहो, इस तपोभूमि में भी लोग आखेट खेले बिना नहीं रहते—कलियुग का ऐसा ही प्रताप है।

[हनुमानजी का आना; तुलसीदास का प्रणाम करना]

ह०—[हँसकर] कहो तुलसीदास—प्रभु का दर्शन हुआ?

तु०—महाराज, कहाँ?

ह०—क्या अभी नहीं हुआ?

तु०—नहीं तो—

ह०—अभी यहाँ से कोई गया था?

तु०—हाँ, दो अहेरी बालक।

ह०—वही तुम्हारे इष्टदेव राम-लक्ष्मण थे।

[हनुमानजी जाते हैं। तुलसीदासजी पछताने लगते हैं। इतने में कुछ शब्द सुनकर चौंक उठते हैं]

तु० दा०—अहा, यह रामलीला के लिए रामदल निकल रहा है। चलूँ और इसे देखकर मन को सन्तोष दूँ।

[तुलसीदासजी जाते हैं]

दृश्य ३

[दो मनुष्यों का प्रवेश]

पहला—हाँ क्या कहा? उस ब्राह्मण का दर्शन हुआ

दूसरा—हां ।

प०—किस प्रकार ?

दू०—वह उसकी रथी के साथ सती होने जा रही थी। मार्ग में उसे तुलसीदास नाम के साधु मिले जो अभी काशी से आए हैं । ब्राह्मणी ने उन्हें प्रणाम किया। उन्होंने आशीर्वाद दिया कि 'सौभाग्यवती हो।' लोगों ने कहा कि महाराज यह इसके पति की रथी है; यह तो सती होने जा रही है और आप कहते हैं कि सौभाग्यवती हो ! उन्होंने अपने कमंडल में से थोड़ा सा जल उसके मुँह में डालकर, 'राम कहो', 'राम कहो' कहा तो वह राम राम कहता हुआ उठ बैठा।

प०—भला !

दू०—तो चलो, ऐसे महात्मा का दर्शन करना चाहिए।

प०—वे रहते कहाँ हैं ?

दू०—सन्त लोग कहाँ रहते हैं ? बस, जहाँ मिल जायँ वहीं रहते हैं।

[तुलसीदासजी का प्रवेश]

तु०—वाह, क्या अच्छी रामलीला हुई है। [दोनों से] विभीषण को राजतिलक देकर रामदल के अवध

लौटने की लीला यहाँ काशी से अच्छी होती है तुमने देखी ?

प०—[न पहचानकर] ब्राह्मण देवता, क्या आ बहुत गहरी छानी है ? भला आजकल और रामलीला !

दू०—महाराज, तनिक सावधान रहा करो।

तु०—तो क्या तुम लोगों को मेरी बात का विश्वा नहीं है ?

दू०—विश्वास ! ह ह ह ह ! [हँसता है]

प०—ह ह ह ह ! [हँसता है]

तु०—चलो मैं अभी दिखा दूँ।

दोनों—चलो। [जाते हैं]

दृश्य ४

[हनुमानजी का प्रवेश]

ह०—धन्य है, तुलसीदास ! धन्य है ! वाल्मीकि के अवतार ! तुझे धन्य है, जो भगवान की तेरे ऊपर इतनी दया है ! आपने दर्शन के लिये ही भगवान ने तुझे यह लीला दिखलाई थी। और नहीं भला, आजकल और रामलीला !

[तुलसीदास का प्रवेश]

तु०—[प्रणाम ...] ...दर है, मैं फिर भूला ! है

गनियान, मैंने फिर पाया खाया। श्रीभगवान ने नी अमोघ कृपा से मुझे दर्शन दिए पर मुझ शठ ने नके चरणों में गिरकर दंड प्रणाम भी न किया।—हा—

द०—भक्तजी, पछताने की कोई बात नहीं। कलि- ग में प्रत्यक्ष रूप से प्रभु का दर्शन पाना भव है। तुम बड़े भाग्यवान हो कि तुम्हें इस भाँति दर्शन हो गया। जाओ, रघुनाथजी का सदा ध्यान रो और उनका भजन करो।

तु०—बहुत अच्छा महाराज। प्रणाम करके चले ते हैं।

[पटाक्षेप]

ठिन शब्द—

घोर पाप, शान्ति, सुमिरन, महात्मा, संकट, ुति, अहेरी, आखेट, कलियुग, प्रताप, इष्टदेव, मदल, रथी, सती, सौभाग्यवती, सावधान, नीम, प्रत्यक्ष, असंभव।

श्न—

(१) आशय समझाओ 'अहेरी आवो है'।

(२) वाल्मीकि का अवतार किसे कहा है? क्यों?

(३) तुलसीदास ने रामचन्द्रजी को दोनों बार क्यों न पहिचाना?

विनय

प्रभु हो ऐसी तो न बिसारो।
करत पुकार नाथ तुव रूठे कहुँ न निबाह हमारो।
जौ हम बुरे होइ नहिं चूकत नित ही करत बुराई।
तौ फिर भले होइ तुम छाँड़त काहे नाथ! भलाई।
जो बालक अरुझाइ खेल में जननी सुधि बिसरावै।
तो कछु माता ताहि कुपित है ता दिन दूध न प्यावै।
मात पिता गुरु स्वामी राजा जो न दया उर लावैं।
तौ शिशु सेवक प्रजा न कोइ विधि जग में निबहन पावैं।
दयानिधान कृपानिधि केशव करुणा भक्त-भय-हारी।
नाथ न्याव तजने ही बनि है हरीचन्द की बारी॥

कठिन शब्द—

बिसारो, तुव, रूठे, अरुझाइ, कछु, कुपित, निबहन, भक्त-भय-हारी, तजने।

प्रश्न—

(१) कवि क्या चाहता है?

(२) यदि माता पिता, गुरु, स्वामी, राजा दया न करें तो क्या हो?

पाठ ४१

डाकघर

गरमी की छुट्टी होने पर माधवलाल का विचार पच-मढ़ी जाने का हुआ। उसने आवश्यक सामान बाँध लिया। उनके भाई साधुशरण स्टेशन तक पहुँचाने गए। स्टेशन पहुँचने पर माधवलाल ने देखा कि वे सौ रुपये के नोट लाना भूल गए थे। उनके पास केवल २५) के नोट और चार रुपये थे। इतना रुपया उनकी यात्रा के लिये काफी न था। गाड़ी के आने का समय हो गया था। घर जाकर समय पर लौटना संभव न था। उन्होंने साधु-शरण को अपने सन्दूक की कुंजी देकर कहा—मैं तो चलता हूँ। सौ रुपये डाक से भेज देना। माधवलाल ने पिपरिया का टिकट कटाया और रेलगाड़ी पर बैठ रवाना हो गया।

साधुशरण ने घर आकर एक सौ रुपये के नोट निकाले। उन्हें एक लिफाफे में रक्खा। फिर गोंद से उसे बन्द कर, सुई से छेद दो स्थानों पर तागे की गाँठी दे दी। उस पर लाख से अपनी मुहर भी लगा दी। फिर पता और रकम की तादाद लिख कर लिफाफा डाकघर ले गया। पोस्टमास्टर ने कहा कि इस पर पाँच

पैसे का टिकट लिफाफे के लिये, तीन आने के टिक
रजिस्ट्री के लिये और तीन आने के टिकट बीमा के
लिये, अर्थात कुल सवा सात आने के टिकट लग
दीजिए। रजिस्ट्री कराने से चिट्ठी डाकद्वारा सावधानत
से भेजी जायगी ताकि खो न जाए। यदि खो गई तो
बीमे के तीन आने देने से डाकविभाग तुम्हें सौ
रुपये भर देगा। टिकट लगा देने पर डाकबाबू ने उस
पर नम्बर चढ़ा कर रजिस्टर पर लिख लिया और मुह
लगाकर एक रसीद दे दी।

उस रसीद को लेकर साधुशरण ने सावधानता से
रख लिया। यदि वह लिफाफा न पहुँचता तो उसी
रसीद का नम्बर लिखकर डाकखाने द्वारा उसका पता
लगाया जा सकता था। पर डाकखानेवाले बीमा
सावधानता से भेजते हैं जिससे उन्हें हानि न उठानी पड़े।
जितना अधिक रुपया भेजा जाय उतनी ही अधिक बीमा
की फीस देनी पड़ती है।

चौथे दिन बीमा के पहुँचने की रसीद भी आ गई।
रसीद साधुशरण से पहले ही भरा ली गई थी। इसका
अलग खर्च न देना पड़ा।

एक सप्ताह पश्चात माधवलाल का कार्ड आया।
उसमें उन्होंने सौ रुपये के नोट पाने का समाचार

यदि १) से १०) तक भेजना होता तो ⌐) देने पड़ते। २५) पर उसे चार आने देने पड़े। इस प्रकार पचीस पचीस रुपयों पर चार चार आना बढ़ता जाता है। मनीआर्डर के रुपयों को बाँटकर डाकघरवाले बिना कुछ लिए पानेवाले की रसीद पहुँचा देते हैं। यदि मनीआर्डर के रुपये शीघ्र भेजना हो तो मनीआर्डर खर्च के साथ १) और देने से तारद्वारा मनीआर्डर तुरन्त भेजा जा सकता है।

तारद्वारा समाचार बहुत जल्द आ जा सकता है। पर खर्च अधिक होता है। आजकल बारह शब्दों के तार का तेरह आना लेते हैं। बारह शब्दों के ऊपर एक आना प्रतिशब्द और खर्च पड़ता है। तार वहीं भेजा जा सकता है जहाँ तारघर हो। यदि कहीं तारघर न हो तो तारघर से समाचार डाकद्वारा भेजा जाता है।

डाक जाने के जो नियम बतलाए गए हैं वे भारत भर के लिये एक हैं। भारत के बाहर इँग्लेंड, यूरोप, अमरीका, आदि देशों में डाक-व्यवहार के नियम भिन्न भिन्न हैं जो डाकघर से जाने जा सकते हैं।

डाकघर में एक और बड़ा भारी सुभीता है। यदि बम्बई, कलकत्ता या किसी दूसरे स्थान से किसी दूकानदार से हम कोई पुस्तक या वस्तु मगवाएं तो वह उसका

सल बनाकर डाकघर में दे देगा और डाकवाले उसे नों पर पहुँचा देंगे। डाकवाले उसका दाम, पारसल तथा जिस्ट्री का खर्च, और उसका मूल्य तथा मनी-आर्डर का खर्च इनसे लेकर अपनी फीस तो रख लेंगे और दूकानदार का रुपया उसके पास पहुँचा देंगे। इस प्रकार के पारसलों को वेल्यू पेबल पारसल कहते हैं।

डाकखाने में हम रुपया भी जमा कर सकते हैं। यदि आवश्यकता हो तो प्रतिसप्ताह हम रुपये उठा भी सकते हैं। डाकखानों में वर्ष भर में ७५०) से अधिक जमा नहीं किया जाता। जमा की हुई रकम पर ३) रु० सैकड़ा प्रतिवर्ष ब्याज भी मिलता है। बहुत छोटे देहाती डाकघरों में रुपये जमा नहीं किए जाते।

आजकल कुछ अधिक पैसे लेकर वायुयान-द्वारा भी पत्रादि दूर दूर के देशों में भेजे जाने लगे हैं। इनका विवरण बड़े डाकघरों में जाना जा सकता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि डाकघरों से जनता को बड़ा सुभीता पहुँचता है।

कठिन शब्द—

विदित, सावधानता, हस्ताक्षर, फीस।

प्रश्न --

(१) नोट से रुपया भेजने में तुम्हें क्या करना पड़ेगा ?

(२) मनीआर्डर से रुपया भेजने में तुम्हें क्या करना पड़ेगा ?

(३) पारसल और वेल्यू पेबल पारसल किसे कहते हैं ?

पाठ ४२

आवागमन के साधन

(१)

दिवाली की छुट्टी में बालाघाट का स्कूल दस दिन के लिये बन्द हुआ। आनन्द अपने पिता मोहनसिंह के साथ अपनी बहिन गोदावरी के यहाँ नागपुर गया। मार्ग में वैन गंगा का पुल पड़ा। पुल टूट बिगड़ गया था। गाड़ी रुक गई। यात्रियों से कहा गया कि उन्हें नीचे उतरकर, नाव-द्वारा नदी पार करके, चलना होगा। जब उधर की गाड़ी आ जायगी तब उस पर बैठकर वे नागपुर [illegible]

[illegible] सहन हुई। [illegible] के यहाँ [illegible]

मोहनसिंह—बहुत दिन से गाढ़ू को नहीं देखा है। इस बार लोगों की राह देखना होगी, हम न जाएँगे तो वह बहुत उदास होगी।

भागचन्द—हम लोग और किसी समय चलते तो क्या होता। इस समय चलने में तो बड़ा कष्ट है।

मोहनसिंह अब तो रेल निकल जाने से आवागमन बहुत सरल हो गया है। यदि तुम्हें बहंगी या डोली पर जाना पड़ता तो तुम्हारी क्या दशा होती?

भागचन्द—मैं तो कभी न जाता। अच्छा पिताजी, आवागमन के कौन कौन से उपाय हैं?

मोहनसिंह—आवागमन के अनेक उपाय हैं। कोई ... या घोड़े पर चलता है, कोई बैलगाड़ी या घोड़ागाड़ी ... चलता है। कुछ देश ऐसे हैं जहाँ गधे की सवारी में आदर नहीं माना जाता। मरुस्थलों में ऊँट की सवारी ... जाती है। पर्वतीय प्रदेशों में बकरे, खच्चर और ... गाय बोझा ढोने के काम में लाए जाते हैं। नदी ... नहर है तो नाव से ... जा सकता है। नावें ... से ... जाना ... की सहायता ... चलती है। परन्तु ... जहाज उसी प्रकार ... के द्वारा चलाए ... जस ...

भागचन्द—आपने मेरी साइकिल का नाम ही न लिया।

मोहनसिंह—नदी नाले उतरने चढ़ने की कठिनाई पर तुमने बात उठाई थी। इसलिये मैंने साइकिल का नाम नहीं लिया। साइकिल नदी-नालों और पहाड़ों पर नहीं उतर चढ़ सकती। ऐसे स्थानों में साइकिल तुम्हें न ले जायगी, बल्कि तुम्हें ही उसे ढोना पड़ेगा। हाँ, जहाँ घोड़ा-गाड़ी, ताँगा, एक्का, बग्घी, फिटन जा सकें वहाँ साइकिल भी जा सकती है। परन्तु अब गाड़ी-ताँगों का वह मान न रहा। उनका स्थान मोटरकार और मोटर लारियों ने ले लिया है। जिन सड़कों पर ताँगे-बग्घियाँ चल सकती हैं उन पर मोटरें भी चल सकती हैं। मोटरें रेल के बराबर बल्कि उससे भी अधिक तेज दौड़ सकती हैं। इसलिये उनका प्रचार बढ़ता जाता है। परन्तु मोटरों के लिये अच्छी सड़क होना आवश्यक है। अब एक ऐसी सवारी निकली है जो मोटर, रेल, सभी से तेज चलती है और उसे न सड़क की आवश्यकता है, न पटरी की। उसका नाम वायुयान या हवाई जहाज है। वह मोटर की तरह पेट्रोल से चलता है। सम्भव है कि कुछ ही दिनों में हवाई जहाज का प्रचार भी उतना ही बढ़ जाय जितना आजकल रेलगाड़ी या मोटरों का है।

भागचन्द—जब लोग नदी पहाड़ों पर साइकिल मोटर आदि का उपयोग ही नहीं कर सकते तब वे उन्हें खरीदते ही क्यों हैं ?

मोहनसिंह—उपयोग क्यों नहीं कर सकते ? सड़क और पुल बन जाने पर ये सवारियाँ पहाड़ पर चढ़ सकती और नदी पार कर सकती हैं। सड़कों में धीरे धीरे उतार चढ़ाव रक्खा जाता है। नालों और नदियों पर पुल बनाने में व्यय अवश्य अधिक पड़ता है परन्तु एक बार पुल बन जाने पर बहुत दिनों के लिये सुभीता हो जाता है। अभी जबलपुर में नर्मदा नदी के तिलवारे घाट पर पुल बनाया गया है। अब बरसात में भी मोटरें उस पुल पर से नदी पार कर लिया करेंगी।

भागचन्द—क्या रेल की सड़क में भी उतार चढ़ाव होता है ?

मोहनसिंह—हाँ, रेल की सड़क का उतार चढ़ाव बहुत क्रमपूर्वक होता है, इसलिये तुम्हें जान नहीं पड़ता। वैसे ही जब रेलगाड़ी टेढ़ी मेढ़ी सड़क पर घूमती है तब भी तुम्हें मोड़ नहीं जान पड़ता।

भागचन्द—जान क्यों नहीं पड़ता ? कहीं कहीं डब्बे की खिड़कियों से इंजन से आगे पीछे के सब डब्बे दिखने लगते हैं। वही तो मोड़ है न ?

मोहनसिंह—हाँ। एक बात और जानने योग्य है। यदि हम गोंदिया से गाड़ी बदलकर नागपुर न आ डोंगरगढ़ की ओर चले जाते तो रेल की सड़क पर एक बोगदा देखने को मिलता। वहाँ पहाड़ फोड़कर सुरङ्ग बनाई गई है। गाड़ी उसके भीतर से होकर जाती है। जब गाड़ी बोगदे के भीतर प्रवेश करती है तब उसमें अँधेरा छा जाता है। अपना हाथ फैलाओ तो वह भी नहीं दिखाता। पर गाड़ी वेग से भागती हुई मिनट दो मिनट में सुरङ्ग पार कर जाती है। जहाँ दूर दूर तक बोगदों के भीतर से रेल की सड़क जाती है, वहाँ बोगदों के भीतर उजाला का प्रबन्ध भी रहता है।

इतने में नागपुर से गाड़ी आ गई। यात्री उतरने लगे। तब ये लोग उस गाड़ी में बैठकर नागपुर चले गए।

कठिन शब्द—

आवागमन, साधन, अनादर, मरुस्थल, वायुयान, प्रचार, क्रमपूर्वक, बोगदा, सुरङ्ग।

प्रश्न—

(१) भाप के द्वारा कौन कौन यान चलाए जाते हैं?

(२) बोगदा किसे कहते हैं?

(३) मोटर और वायुयान क्यों दिनों दिन बढ़ रहे हैं?

पाठ ४३

बाल-लीला

(१)

मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी।
किती बार मोहिं दूध पिअत भई यह अजहूँ है छोटी।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यों ह्वै है लाँबी मोटी॥
काढ़त गुहत न्हावत ओंछत नागिन सी भ्वै लोटी।
काचो दूध पिआवत पचि पचि देत न माखन रोटी॥
सूर श्याम चिर जीवो दोऊ हरि हलधर की जोटी।

(२)

मैया हौं न चरैहौं गाय।
सिगरे ग्वाल घिरावत मोसों, मेरे पायँ पिराय।
जो न पत्याहि पूछ बलदाउहिं, अपनी सौंह दिवाय।
यह सुनि सुनि जसुमति ग्वालन को गारी देत रिसाय॥
मैं पठवति अपने लरिका को, आवै मन बहराय।
सूर श्याम मेरो अति बालक, मारत ताहि रिंगाय॥

कठिन शब्द—

बेनी, न्हावत, ओंछत भ्वैं, पचि पचि, जोटी, घिरावत, पत्याहि, सौंह, बहराय, रिंगाय।

प्रश्न—

(१) पहले पद में कृष्णजी क्या कहते हैं ?
(२) कृष्ण को यशोदा क्यों वन भेजती हैं ?

पाठ ४४

मेवाड़ का सिंह

उदयपुर के राना प्रतापसिंह के स्वर्गवास को चार [illegible] वर्ष हो गये; परन्तु उनके जीवन का पवित्र चरित [illegible] जपूतों के हृदय में नया ही बना है। उनकी [illegible] रता, देश-प्रीति, और दृढ़ता का स्मरण करके क्षत्रियों [illegible] क्रोध भी आता है, आनन्द भी होता है, और उनकी [illegible] खों से आंसू भी निकलने लगते हैं।

प्रतापसिंह के पहले मेवाड़ में जितने राना हो गए [illegible] उनकी राजधानी चितौर थी। उनके पिता [illegible] ना उदयसिंह के समय में अकबर बादशाह ने चितौर [illegible] चढ़ाई करके उसे अपने अधिकार में कर लिया था। इस [illegible] ड़ाई में कई हजार राजपूत मारे गए थे और चितौर छोड़ [illegible] र उदयसिंह को अरवली पहाड़ के जङ्गलों में जाकर [illegible] हना पड़ा था। वहाँ उन्होंने, अपने नाम पर, उदयपुर

पाठ ४३

बाल-लीला

(१)

मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी।
किती बार मोहि दूध पियत भई यह अजहूँ है छोटी।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यों ह्वै है लाँबी मोटी॥
काढ़त गुहत न्हवावत ओंछत नागिन सी भ्वै लोटी।
काचो दूध पियावत पचि पचि देत न माखन रोटी॥
सूर स्याम चिर जीवो दोऊ हरि हलधर की जोटी।

(२)

मैया हौं न चरैहौं गाय।
सिगरे ग्वाल घिरावत मोसों, मेरे पायँ पिराय।
जो न पत्याहि पूछ बलदाउहि, अपनी सौंह दिवाय।
यह सुनि सुनि जसुमति ग्वालन को गारी देत रिसाय॥
मैं पठवति अपने लरिका को, आवै मन बहराय।
सूर स्याम मेरो अति बालक, मारत ताहि रिंगाय॥

कठिन शब्द

बेनी न्हवावत ओंछत भ्वै पचि पचि, जोटी
घिरावत पत्याहि सौंह, बहराय, रिंगाय।

दुर्भाग्य ने सब ओर से घेर लिया। तब से उनको एक क्षण भी सुख से रहने का दिन नहीं आया। अपनी स्त्री और सन्तान को साथ लिए हुए एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ पर, दूसरे से तीसरे पर, और तीसरे से चौथे पर जाकर, उनको अपनी और अपने कुटुम्ब की प्राण-रक्षा करनी पड़ी। आज यहाँ, कल वहाँ, और परसों किसी दूसरे स्थान में। इसी प्रकार वे बराबर घूमते और नाना प्रकार के कष्ट सहते रहे। जङ्गली फल उनका भोजन था, घास-फूस उनका बिछौना था, और खाने-पीने के समय पेड़ों के पत्ते उनके बरतन थे। उनका पता लगाने के लिये मुगलों के दूत पहाड़ों और घाटियों में घूमा करते थे। कभी कभी वे इसी विपत्ति में फंस जाते थे कि अपनी स्त्री, पुत्र आदि को विश्वास-पात्र भीलों के यहाँ रख कर उन्हें कहीं न कहीं चला जाना पड़ता था। कभी कभी उनको फल तक खाने को नहीं मिलते थे। ऐसी दशा में घास के बीजों की रोटी खाकर वे अपने दिन काटते थे। एक बार सन्ध्या को उनकी लड़की के खाने के लिये एक रोटी रक्खी थी। उसे एक वन-बिलाव उठा ले गया। यह देखकर लड़की चिल्ला उठी और बिलख बिलख कर रोने लगी। अपनी संतान की ऐसी दुर्दशा देखकर प्रतापसिंह का वज्र के समान कड़ा हृदय भी पिघल उठा। उस

समय उनको इतना दुःख हुआ कि उन्होंने अकबर की
शरण में जाने का विचार कर लिया। परन्तु, बीकानेर के
राजा के छोटे भाई पृथ्वीराज के समझाने पर उन्होंने वह
विचार छोड़ दिया।

बहुत वर्षों तक इस प्रकार दुःख भोग कर प्रतापसिंह
मारवाड़ की ओर गये। इसी समय उनके मन्त्री
ने अपने पूर्वजों की इकट्ठी की हुई बहुत-सी सम्पत्ति उनके
सम्मुख रखकर अपूर्व स्वामि-भक्ति दिखलाई। उसी धन
से प्रतापसिंह ने फिर सेना इकट्ठी करके मुग़लों से युद्ध
किया। इस युद्ध में उनकी जीत हुई और चित्तौर, अज-
मेर, तथा मण्डलगढ़ को छोड़ कर उन्होंने अपना सारा
राज्य अकबर से छीन लिया। परन्तु, मेवाड़ की प्राचीन
राजधानी चित्तौर को न पाने के कारण उनके हृदय की
चिन्ता नहीं गई। उसी चिन्ता ने उनको निर्बल कर
दिया। धीरे धीरे रोग ने प्रतापसिंह के शरीर को अपना
घर बना लिया और शीघ्र ही उनको यह संसार सदैव के
लिये छोड़ देना पड़ा।

बहुत दिनों तक भारी आपदाओं में फँसे रह कर भी
प्रतापसिंह ने हिम्मत नहीं छोड़ी। उन्होंने अपने देश के ऊपर
अपना [illegible]। उन्होंने कई बार विफल-
मनोरथ होने पर भी उद्योग करने में कमी नहीं की। आपत्ति

घबड़ाना न चाहिए; अपने देश के कल्याण के लिये कोई बात उठा न रखनी चाहिए; और एक बार सफल न होने पर उसे पूरा करने के लिये फिर भी प्रयत्न करना चाहिए—प्रतापसिंह के चरित से यही शिक्षा मिलती है।

कठिन शब्द—

विपत्ति, जीविका, पूर्वज, स्वयं, अपमान, रुधिर, व्याकुल, कुटुम्ब, विलख, धैर्य, विफल-मनोरथ।

प्रश्न—

(१) मानसिंह के साथ राणा ने भोजन क्यों न किया?
(२) चेतक के बारे में तुम क्या जानते हो?
(३) प्रताप को सेना खड़ी करने के लिये धन कहां से मिला?
(४) महाराणा के जीवन से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है?

पाठ ४५

नल और दमयन्ती

(१)

प्राचीन समय में राजा वीरसेन निषध देश में राज्य करते थे। उनके पुत्र का नाम नल था। वह बड़ा विद्वान, वीर और रूपवान था। वह अश्वविद्या में बहुत निपुण था। उस समय विदर्भ देश में भीम नामक राजा राज्य करते थे। उनके एक गुणवती और रूपवती कन्या थी जिसका नाम दमयन्ती था। जब यह कन्या विवाह के योग्य हुई तब राजा

को इसके विवाह की चिन्ता हुई। राजा भीम से लोग आकर नल की प्रशंसा करते और राजा नल के यहाँ जाकर दमयन्ती के रूप और गुण का बखान करते। एक दूसरे के गुण सुनकर, नल और दमयन्ती को एक दूसरे से विवाह करने की इच्छा हुई।

एक समय राजा नल ने एक तालाब में कुछ हंसों को देखा। उसने उनको पकड़ना चाहा। और सब हंस तो भाग गए, केवल एक हंस राजा के हाथ आया। उस पक्षी ने राजा से विनय की कि महाराज! आप मुझे न मारें; मैं आपका संदेसा ले जाकर दमयन्ती से कहूँगा, जिससे वह आपके अतिरिक्त किसी दूसरे से विवाह न करे। राजा नल ने उसका कहना मान कर उसे छोड़ दिया। वह हंस अपने साथियों में जा मिला और विदर्भ देश की ओर उड़ चला। सब हंस विदर्भ नगर में पहुँच कर दमयन्ती के महल पर उतर पड़े। उन पक्षियों को देखकर दमयन्ती बहुत प्रसन्न हुई। वह उन्हें पकड़ने को दौड़ी तो वे पक्षी इधर उधर उड़ गए। जिस हंस से नल की बातें हुई थीं, जब दमयन्ती उसे पकड़ने गई, तब उसने राजा नल के रूप और गुण की प्रशंसा करके दमयन्ती से नल के साथ विवाह करने की सलाह दी। वह पहले ही से राजा नल को अपने मन से वर

चुकी थी। हंस के द्वारा नल के प्रेम का पता पाकर और भी प्रसन्न हुई और अपना मनोरथ हंस के द्वारा राजा नल के पास भेजा। हंस ने आकर राजा नल को दमयन्ती का समाचार कह सुनाया।

राजा भीम ने अपनी कन्या को विवाह योग्य जानकर स्वयंवर रचा। देश भर में दमयन्ती के स्वयंवर का समाचार भेजा गया। न्योता पाकर बड़े बड़े राजा दमयन्ती का स्वयंवर देखने के लिये राजा भीम के नगर में आने लगे। राजा भीम ने उन सबका यथायोग्य सत्कार किया। राजा नल भी दमयन्ती के स्वयंवर में पहुँचे।

स्वयंवर के दिन राजा भीम ने सब राजाओं को स्वयंवर-सभा में बुलाया। दमयन्ती भी वहाँ लाई गई। उसने राजा नल के गले में जयमाला डाल दी। राजा भीम ने राजा नल के साथ दमयन्ती का विवाह कर दिया। राजा नल कुछ दिन वहाँ रह कर, दमयन्ती के साथ अपने नगर को लौट आये। वे सुखपूर्वक रहने लगे। कुछ समय बाद नल और दमयन्ती के इन्द्रसेन नाम का एक पुत्र और इन्द्रसेना नाम की एक कन्या हुई।

(२)

यों तो राजा नल बड़े गुणी थे पर उनको जुआ खेलने की आदत पड़ गई थी। जब दमयन्ती ने सुना कि

का स्वयंवर
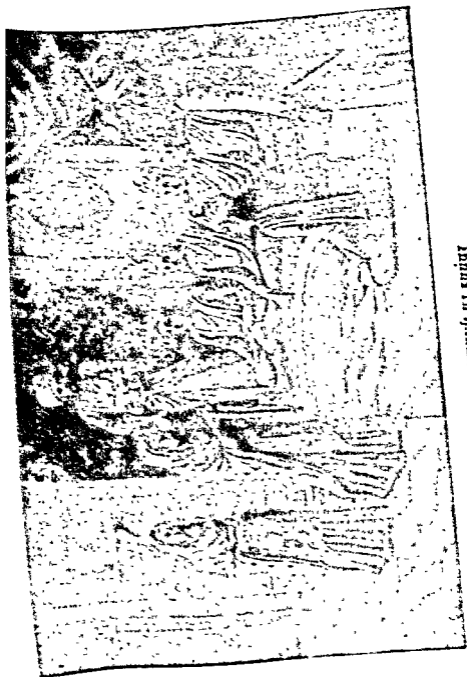
राजा जुआ खेलते हैं तब उसने उन्हें बहुत रोका, पर राजा ने उसकी बात न सुनी। कोई भी उनका जुआ खेलना बन्द न कर सका। जब दमयन्ती ने देखा कि राजा नल किसी का कहना नहीं मानते तब उसने सारथी को बुलाकर कहा—इन्द्रसेन और इन्द्रसेना को मेरे पिता के यहाँ पहुँचा आ। दमयन्ती की आज्ञा से उन बालकों को रथ पर चढ़ाकर सारथी विदर्भ देश पहुँचा आया।

धीरे धीरे राजा नल जुए में सब राज-पाट हार गए। वे केवल एक वस्त्र पहिन, दमयन्ती को साथ ले, अपनी राजधानी छोड़कर जगल की ओर चल दिए। राजा नल के चले जाने पर पुष्कर ने नगर में यह ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो कोई नल को आश्रय देगा वह मेरे हाथ से मारा जाएगा। इस भय से राजा नल को किसी ने ठहरने तक न दिया। वे जंगल में तीन दिन तक केवल जल पीकर रहे। इसके पश्चात कुछ फल मूल खाकर पेट भरा। आगे चलकर राजा नल ने एक पेड़ पर कुछ पक्षियों को बैठे देखा। उन्होंने उनके पकड़ने का विचार कर उन पर अपनी धोती फेंकी। पर वे पक्षी धोती समेत उड़ गए। अपनी यह दुर्दशा देखकर राजा नल ने दमयन्ती से कहा कि देखो, पहाड़ पर जो मार्ग जाता हुआ दिखाई देता है वह दक्षिण को ओर गया है।

यही तुम्हारे पिता के देश (विदर्भ) को जाता है। उस
कहा--क्या आप चाहते हैं कि मैं अपने पिता के घर चल
जाऊँ ? मुझसे यह न होगा। आप तो अकेले वनों में मा
मारे फिरें और मैं अपने पिता के यहाँ जाकर चैन से रहूँ
यह कभी न होगा। मैं आपके ही साथ रह कर आपके कष्ट
को दूर करती रहूँगी। यदि आपकी यह इच्छा है कि
अपने माता पिता के पास चली जाऊँ तो कृपाकर आप भ
मेरे साथ चलें। वे आपका बड़ा आदर करेंगे। हम दोनें
वहाँ सुखपूर्वक रहेंगे। पर नल ने विदर्भ देश को जान
स्वीकार न किया। राजा नल इसी प्रकार भूखे प्यासे
फिरते रहे। दमयन्ती थककर सो गई। नल वहाँ से चुपचा
चले गए। दमयन्ती जंगल में अकेली सोती रह गई।

(३)

जब दमयन्ती जागी तब नल को न देख रोने लगी
उसने आसपास खोज की। कहीं भी पता न चला। अन्त
में वह रोती, पीटती आगे बढ़ी। मार्ग में उसे एक अजगर
ने पकड़ लिया, परन्तु एक बहेलिये ने आकर उसकी
रक्षा की

दमयन्ती [illegible] व्यापारियों के साथ
चलकर [illegible] जा निकली। उसे
[illegible] शासन की [illegible]

न, नौकर द्वारा, अपने पास बुलाया और पूछा—
म कौन हो, किसकी बेटी हो और क्यों मारी मारी
फिरती हो ? दमयन्ती ने अपना सब हाल कहा, परन्तु
पिता और पति का नाम न बताया। राजमाता ने कहा
कि तुम मेरे यहाँ रहो; तुम्हारा पति भी घूमता फिरता
यहीं आजायगा। दमयन्ती उसके साथ अपने दुःख के दिन
काटने लगी।

इधर राजा नल दमयन्ती को वन में अकेली छोड़कर
एक घने वन में जा पहुँचे। वहाँ उन्हें एक साँप ने काट
खाया। उसके विष से वे मरे तो नहीं पर उनका रंग
काला होगया। अपना बदला हुआ रूप देख कर राजा
प्रसन्न हुए। उन्होंने सोचा कि अब मुझे कोई न पहचानेगा
वे अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण के यहाँ गए। राजा ने पूछा
तुम कौन हो, क्या चाहते हो और क्या काम कर सकते
हो ? नल ने कहा—मैं बाहुक नामक राजा नल का सारथी
हूँ। घोड़ों को चलाने में मैं निपुण हूँ। मैं रसोई भी अच्छी
बना सकता हूँ। राजा ने उसे नौकर रख लिया।

(४)

जब दमयन्ती के पिता राजा भीम को यह समाचार
मिला कि राजा नल जुए में राज्य हारकर दमयन्ती के
साथ वन को चले गए हैं, तब उन्होंने बेटी और दामाद का

खोज में अपने दूत भेजे। उनमें से सुदेव नाम के ब्राह्मण ने घूमते घूमते चन्देरी के राजा के यहाँ जाकर दमयन्ती को पहचाना। उसने दमयन्ती के पास जाकर अपना परिचय दिया और कहा कि मैं तुम्हीं को ढूंढ़ने आया हूँ। दमयन्ती ने रो रो कर अपने माता पिता, और भाई का हाल उस ब्राह्मण से पूछा। राजमाता ने वहाँ आकर ब्राह्मण से पूछा कि यह किसकी स्त्री और किसकी पुत्री है? यह अपने पति और माता-पिता से किस प्रकार बिछुड़ गई है? सुदेव ने दमयन्ती का पूरा हाल कह सुनाया। जब राजमाता को मालूम हुआ कि यह विदर्भ देश के राजा भीम की पुत्री और राजा नल की रानी है तब उसे बड़ा दुःख हुआ, क्योंकि वह दमयन्ती की मौसी लगती थी।

मौसी की आज्ञा से दमयन्ती अपने पिता के घर चली गई। दमयन्ती के मिल जाने से राजा भीम को बड़ा आनन्द हुआ। परन्तु राजा को नल की चिन्ता बनी रही। उन्होंने देश देशान्तरों में नल का पता लगाने को ब्राह्मण भेजे। एक ब्राह्मण ने लौट कर कहा कि मैं अयोध्या नगर के राजा ऋतुपर्ण के यहाँ गया था वहाँ राजा [illegible] ने आकर [illegible] का समाचार सुनाया [illegible]

दमयन्ती ने समझ लिया कि हो न हो वे राजा नल ही हैं। उसने उस ब्राह्मण को अयोध्या नगरी में राजा ऋतुपर्ण के यहाँ सन्देसा देकर भेजा कि विदर्भ देश के राजा की पुत्री दमयन्ती अब फिर अपना स्वयंवर करना चाहती है, क्योंकि राजा नल का तो अब कहीं पता नहीं है। अतएव आप कृपाकर कल सवेरे ही वहाँ अवश्य पधारें। इस स्वयंवर के लिये बहुत से राजा और राजकुमार एकत्र हुए हैं। कल सूर्य्य निकलने तक आप पहुँच जायें तो अच्छा है, क्योंकि वह सवेरे ही किसी राजा को वरेगी। अयोध्या पहुँचकर उसने राजा से दमयन्ती के स्वयंवर का सन्देसा कहा।

ब्राह्मण की बात सुनकर राजा ने बाहुक से कहा कि मैं कल सवेरे ही दमयन्ती के स्वयंवर में पहुँचना चाहता हूँ। यह सुनकर नल को बड़ा दुःख हुआ। उसने मन ही मन यह विचारा कि दमयन्ती ने ऐसा काम कभी न होगा। मेरे बुलाने के लिये ही शायद यह उपाय सोचा गया है। बाहुक ने राजा से कहा कि कोई चिन्ता नहीं, मैं आपको कल सवेरे ही पहुँचा दूँगा। बाहुक ने जैसा कहा वैसा ही किया। सूर्य [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] को पहुँचा [illegible] [illegible] राजा ने बाहुक से कहा कि तुम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

दाँना जानने की विद्या) सिखा दूँ। नल ने राजा को अश्वविद्या सिखाकर राजा से अक्षविद्या सीख ली।

जब राजा ऋतुपर्ण राजा भीम के यहाँ आए तब राजा भीम ने उनका बड़ा सत्कार किया। दमयन्ती ने बाहुक की कई प्रकार से परीक्षा की और अन्त में निश्चय किया कि यही मेरा पति राजा नल है। उसने अपने माता-पिता से आज्ञा लेकर बाहुक को बुलाया और उसकी अन्तिम परीक्षा ली। जब दमयन्ती ने नल को और नल ने दमयन्ती को देखा तब दोनों अपनी अपनी आँखों में आँसू भर लाए। नल ने कहा कि मुझसे जो अपराध हुआ वह सब काल का प्रभाव था। अब दुःख का अन्त समझना चाहिए। परन्तु मुझे दुःख है कि तुम दूसरा स्वयंवर करना चाहती हो! क्या यह बात सच है? यह सुन दमयन्ती ने सच्चा सच्चा हाल कह सुनाया और कहा कि तुम्हारे बुलाने को ही यह उपाय सोचा गया था। राजा भीम के वैद्य की दवा से राजा नल की कुरूपता दूर होगई और वे फिर ज्यों के त्यों सुन्दर हो गए।

दमयन्ती के माता पिता और राजा ऋतुपर्ण को यह सब समाचार सुनकर बड़ा आनन्द हुआ। राजा ऋतुपर्ण ने नल से अपने अपराध के लिये क्षमा मांगा और

अयोध्या नगरी को लौट गए। इधर राजा नल भी कुछ दिन ससुराल में रहकर, अपनी स्त्री और पुत्र को साथ ले, अपने देश चले गए। अपने राज्य में पहुँच कर उन्होंने अपने भाई पुष्कर से फिर जुआ खेलकर अपना राज्य वापस ले लिया। राज्य पाकर वे दमयन्ती के साथ सुखपूर्वक रहने लगे।

कठिन शब्द—

अश्व-विद्या, रूपवान, रूपवती, समाचार, यथायोग्य, सत्कार, जयमाला, आश्रय, राजमाता, प्रभाव, देश-देशान्तर, ढिंढोरा।

प्रश्न—

(१) स्वयंवर कैसे रचा जाता है ?
(२) पुष्कर ने ढिंढोरा क्यों पिटवाया ?
(३) राजा नल ने अपना नाम क्यों बदल डाला ?
(४) दमयन्ती ने दूसरे स्वयंवर की खबर क्यों फैलाई ?

पाठ ४६

पहेलियाँ

पानी में निशि-दिन रहे, जाके हाड़ न मांस।
काम करे तलवार का, फिर पानी में वास ॥ १ ॥

वाकी जल भरी, सिर पर नारी आग।
बजाई बांसुरी, निकसो कारो नाग ॥२॥
कटे छै-पंच गुनो, मध्य कटे 'अस' होय।
मध्य को जोड़िये, तिय सतवन्ती होय ॥३॥
विहीन अरु मुख-रहित, नारी विप्र लखात।
भूत भोजन धायके, कहत हृदय की बात ॥४॥
वन-भादों बहुत चलत है, माघ पूस में थोड़ा।
नेदो री ऐ चतुर सहेली, अजब पहेली 'मोरी' ॥५॥
अचंभा देखो चल, सूखी लकड़ी लागे फल।
कोई उस फल को खाय, पेड़ छोड़ वह अंत न जाय ॥६॥
पेट दरिद्री नाम, उत्तम घर में वाको ठाम।
की को अनुज विष्णु को सारो, पंडितजी यह अर्थ विचारो ॥७॥

कठिन शब्द—

सतवन्ती, बाँबी, भोजन, श्री, अनुज।

प्रश्न—

(१) पहेली में आनंद क्यों मिलता है?

(२) जो साधारण देहाती पहेलियां तुम्हें याद हों उन्हें सुनाओ।

पहेलियों के उत्तर—

कुम्हार का डोरा, हुक्का, अनाम, नाहा, मोरा, बरछी, शख।

पाठ ४७

मुगल बादशाह

मुगल बादशाहों में छः अधिक प्रसिद्ध हो गए हैं— बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ और औरङ्गजेब। दिल्ली के बादशाह इब्राहीम लोदी को हराकर भारतवर्ष में मुगल-राज्य को जमानेवाला बाबर था। चार ही वर्ष राज्य कर वह सन १५३१ ई० में मर गया। तब उसका पुत्र हुमायूँ बादशाह हुआ। हुमायूँ के बाद उसका पुत्र अकबर राजसिंहासन पर बैठा। मुगल बादशाहों में सबसे बड़ा बादशाह अकबर था। वह बड़ा वीर और बुद्धिमान था। उसके बहुत से शत्रु थे जो चाहते थे कि उसका राज्य छीन लें परन्तु उसने उन्हें हराकर अपना राज्य मजबूत कर लिया।

एक बार उसको एक शत्रु से लड़ना पड़ा जिसका नाम हेमू था। अकबर की जीत हुई। सिपाही उसको पकड़ कर अकबर के सामने लाए और कहा कि हुजूर शत्रु को अपने हाथ से मारिए। इस समय यह बिलकुल लाचार पड़ा है। अकबर ने कहा यह घायल हो गया है और इस समय लाचार है। मैं इस पर हाथ न उठाऊँगा। लोगों ने बहुत कुछ कहा परन्तु अकबर ने हेमू

…नहीं मारा। इसी प्रकार वह अपने कितने ही शत्रुओं …क्षमा कर दिया करता था।

यद्यपि अकबर पढ़ा लिखा न था परन्तु उसे विद्या से …प्रेम था। वह प्रतिदिन अच्छी अच्छी पुस्तकें …पढ़ाकर सुनता था। …उसकी सभा में बहुत से बुद्धिमान मनुष्य जमा रहते थे। वह उनकी अच्छी अच्छी बातें सुना करता था। इससे उसकी बुद्धि तीक्ष्ण हो गई थी।

अकबर

अकबर कभी बेकाम न बैठता था। वह अपने हाथ से बहुत सी वस्तुएँ बनाया करता था। एक बार उसने जङ्गली जानवरों को मारने के लिये एक बन्दूक बनाई थी। उसको शिकार का बड़ा शौक था। वह बहुधा हाथी और शेर का शिकार किया करता था।

अकबर अपनी प्रजा पर बड़ी दया करता था। उन …दिनों अमीर लोग बड़ा अत्याचार करते थे वे अन्यायपूर्वक

रुपया-पैसा ले लेकर धनी हो जाते थे और गरीबों के पास खाने तक को कुछ न रहने देते थे। जब अकबर को यह विदित हुआ तब उसने अमीरों को अत्याचार करने से रोका। इससे प्रजा उस पर बहुत प्रसन्न हुई।

अकबर के उपरान्त जहाँगीर दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। पर सच पूछा जाय तो शासन का भार जहाँगीर की बेगम नूरजहाँ पर था।

जहाँगीर

भारत की विख्यात स्त्रियों में नूरजहाँ का नाम लिया जाता है। इसने [illegible] के प्रभाव [illegible] बादशाह, शाह-जादों और [illegible] अपनी मुद्रा में [illegible]

लिया था। जहाँगीर के राज्य-काल के पिछले सोलह वर्षों में मुगल-राज्य का शासन इसी ने किया था। नूरजहाँ स्वयं बड़ी बुद्धिमती और पढ़ी लिखी स्त्री थी। दीन दुखियों पर वह बड़ी दयालु रहती थी।

शाहजहाँ

जहाँगीर के उपरान्त उसका पुत्र शाहजहाँ गद्दी पर बैठा। शाहजहाँ की कीर्ति का सबसे अच्छा स्मारक ताज-महल है। कहते हैं कि ताजमहल को बनवाने के लिये दूर-दूर के देशों से कारीगर बुलवाए गए थे और हजारों मजदूरों ने तीस वर्ष तक काम करके इस इमारत को

ऐसी ही एक और इमारत बनवाई जाय, जिसमें मरने के बाद उसकी कब्र बना दी जाय, पर उसकी यह लालसा पूरी न हुई। जब शाहजहाँ मरा तब उसके लड़के औरङ्गजेब ने उसे ताजमहल में ही गाड़ दिया।

औरङ्गजेब अपने पिता को कैद कर तख्त पर बैठा। उसने अपने भाइयों को मरवा डाला। उसने हिन्दुओं पर अनेक अत्याचार किए और कठोरतापूर्वक शासन करके राज्य बढ़ाया। उसके मरते ही नवाब स्वतन्त्र होगए और मुगल-राज्य दुर्बल पड़ गया।

कठिन शब्द—

आसक्त, तीक्ष्ण, अत्याचार, अन्यायपूर्वक, उपरान्त, कीर्ति, स्मारक, पच्चीकारी, लालसा।

प्रश्न—

(१) अकबर के स्वभाव का वर्णन करो।
(२) आशय समझाओ—मुट्ठी में कर लिया।
(३) शाहजहाँ किस काम के लिये प्रसिद्ध है?

पाठ ५८

मेरी यात्रा

अगर तुम्हारे पंख होते तो सच बतलाओ, अगर तुम्हारे पंख होते तो तुम क्या करते, क्या तुम किसी सोचते

में पड़े रहते ? यदि मेरे पंख लगे होते तो मैं उड़कर एक बार सारी दुनिया देखता। मान लो मेरे पंख लग गये और मैं पृथ्वी की यात्रा करने लगा। आओ अब तुम्हें पृथ्वी का हाल सुनाऊँ।

देखो, यह हमारा भारतवर्ष है—

"हमारा है यह भारतवर्ष।
फैला कर निज बाहु हिमालय,
खड़ा अनादि काल से निर्भय,
करता है घोषित उसकी जय।
द्वार-रक्षक वह है दुर्धर्ष,
हमारा है यह भारतवर्ष।"

भारत उत्तर में हिमालय की ऊँची दीवार से घिरा है। न जाने कब से हिमालय हम लोगों की रक्षा कर रहा है। वह ऐसा रक्षक है कि उत्तर की ओर से शत्रु उसे लाँघकर देश में नहीं घुस सकते। यदि हिमालय न होता तो यहाँ पानी की एक बूँद भी न गिरती।

इसके उत्तर में तिब्बत का देश है। तिब्बत का धरातल भारत से बहुत अधिक ऊँचा है। यहाँ बड़ी ठंडी हवा चलती है। पर अपने गरम कपड़ों के कारण यहाँ के लड़के उसकी परवाह नहीं करते । हाथ जोड़कर नमस्कार नहीं करते। जीभ निकाल कर स्वागत करना ही उनका

नमस्कार है। यह ढंग हमें बेहूदा लगेगा, पर तिब्बत में ऐसा करना शिष्टाचार समझा जाता है।

हिमालय की बर्फ से ढँकी एक चोटी

तिब्बत के आगे चीन देश मिलेगा। यह बड़ा प्राचीन देश है। यहाँ के लोग बड़ा लम्बी चोटी रखते हैं और बड़े मोटे तल्ले के जूते पहनते हैं। चीनी लोग रंग-बिरंगे और ढीले ढाले रेशमी या सूती कपड़े पहनते हैं। यहाँ के लड़के और लड़कियाँ अपने माता-पिता के बड़े भक्त होते हैं।

चीन के पास ही जापान द्वीप है। यह फूलों का देश है। जापानी लोग फू- [illegible] करते हैं। यहाँ के लड़के अपने सुन्दर [illegible] सुन्दर [illegible] पहनते हैं। जापानी [illegible] चीनी [illegible]